

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग गि—कण्ड 3—उप-कण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-Section (ii) प्राधिकार से प्रकातित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 90]

नई विल्ली, सोमबार, फरवरी 19, 1990/माघ 30, 1911

No. 90]

NEW DELHI, MONDAY, FEBRUARY 19, 1990/MAGHA 30, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या की आती है जिससे कि यह अलग संकालन को काप में रक्षा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित मंत्रालय

(क्रार्थिक कार्यविभाग) (वैकिंग प्रभाग)

<mark>प्रधिमुचन</mark>ाएं

नई दिल्ली, 19 फरबरी, 1990

का.धा. 150(क).—केन्द्रीय सरकार, बैककारी विनियमन प्रधि-नियम, 1949 (1949 का 10), की धारा 45 की उपधारा (7) के श्रनुसरण में बैंक भ्राफ पंजाबूर लिमिटेड, पंजाबूर के इण्डियन बैंग के साथ समामेलन की स्कीम के संबंध में जो उक्त उपधारा के प्रधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी, 1990 की विहित तारीख के रूप में विनिविष्ट करनी है।

[मंख्या 17/5/89-मी.ओ.-III(7)]

MINISTRY OF FINANCE (Department of Economic Affairs) (Banking Division)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 19th February, 1990

S.O. 150(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 20th February, 1990 as the prescribed date in

relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with Indian Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said subsection.

[No. 17|5|89-B.O. III(a)]

का.मा. 151(म).—केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनियमन म्रधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के म्रधीन भारतीय रिजर्ब बैंक द्वारा किए गए भानेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के भ्रधीन चैंक श्राफ शंजावूर निमिटेड, शंजाब्र के मंबंध में उक्त धारा 45 की उपधारा (2) के स्थीन प्रधिस्थान म्रादेश किया है।

और पारतीय रिभवं येंक ने उनन प्रधितियम को धारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रदन्त शक्तियों का प्राोग करने हुए, इण्डियन वैक के साथ बैंक ग्राफ भंजाबुर लिमिटेड, थंजाबुर के समामेलन की स्कीम नैयार की है।

और रिजर्व बैंक ने उसन भारा की उपधारा (6) के उपबर्धों के अनुसान उपन स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंको को भेजने के पण्वान और उसन स्कीम की बाबन प्राप्त सुआर्वों और आक्षेपों पर विचार करने के पण्वान वह स्कीम उपान्तरित की है और इसे मंखूरी के लिये केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

श्रम घतः केलीय सरकार ने उक्त प्रश्नितमम की आरा 45 की उपधारा (7) हारा प्रवक्त गिनियों का प्रयोग करने हुए इसमें प्राने किया नियंधनों और शर्मों के अधीन रहने हुए इस स्कीम की मंजूरी दे वी है।

बैंक भाष पन्जावूर लिमिटेब, बंधावूर अंतरफ बैंक होगा।
 बोर इण्डियन वैंक अंतरिली बैंक होगा।

2. ऐसी तारीका से जिसे केन्द्रीय सरकार उक्त श्रविनियम की धारा 45 की उपवास (7) के अधीन इस प्रयोजन के लिए विनिर्दिश्ट करें (जिसे इसमें इसके पश्चान् विहित नारीख कहा गया है) अंतरक बैंड के सभी प्रधिकार, सक्तियां, सांग, वाबे, हिन, प्राधिकार, विशेषाधिकार, लाभ, ग्रास्तियां और जंगम और स्थावर सम्पत्ति जिसके श्रम्पर्गत भू-धृति केसभी आपतनों या पट्टों या करारों द्वारा भारकित और जनमें अंतर्विष्ट/माटकों और अन्य अनुराणि में और प्रसंगिविदाओं के भन्नीन परिसर, जिसके प्रश्नीन वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्नोचर, नियोजित उपस्कर, संयंद्ध , यंद्र और नाधिक, बही, कागज-पत्न लेखन सामग्री स्टाक, घन्य स्टाक और मामान, सभी स्टाक विनिधान ग्रेयर और प्रतिभृतियों, हाथ में और अभिवहन में प्राप्य सभी हेडियां, लगी हाथ की और लेखा की रोकड़ या बैंकों के पास निश्लेप लेखा (जिसके भरतगँत मार्ग पर या मंक्षिप्त त्**वता पर धन भी है), ब्**लियन, समी बही ऋष, बंधक, ऋण और प्रतिभृतियों के फायदे सहिन धन्य ऋण या उसकी कोई प्रत्याभृति अंतरक बैंक के कारबार के संबंध में सभी ब्रम्य, यवि कोई हों, सम्पत्ति ब्रधिकार और सभी प्रत्याभृतियों के भारित संबंधी फायरे, इस स्कीम के अन्य उपबंधों के भधीन रहते हुए अंतरिती बैंक की अंतरित हो जाएंगे और उसकी सम्पत्ति और ध्रान्तियां बन जाएंगे और विष्ठित तारीख से ही अंतरक बैंक के सभी वायित्व, कर्तव्य और फायदे, इसमें इसके पश्चात उपमंत्रित विस्तार तक और रीति में अंतरिती येक के बायित्व. कर्तव्य और बाध्यनाएं होंगे और बस जाएंगे।

पूर्वेगामी उपबंधों की व्याकता प प्रतिकृत प्रभाव डाले बिना सभी संविद्याएं विलेख, वंद्यन्त, करार. मुक्तारवामें, विधि प्रतिनिधित्व की संबुरियों और किसी भी प्रकृति की प्रन्य लिखानें को विहित तारी क्ष के ठीक पहले प्रास्तिवगीयल या प्रभावशील हों, अंतरिती बैंक के विवद्ध या उसके पक्ष में इसमें उपबंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशील होंगी और जैसे ही कार्यान्तित की का मकेंगी मानो अंतरिती बैंक के स्थान पर प्रतरिती बैंक उसमें प्रभक्तार रहा हो, मानो अंतरिती बैंक के पक्ष में जारी की गयी हों।

यदि विहित्र तारीख को अंतरक येंक द्वारा या उसके विरुद्ध कोई बाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति की फोई अन्य विधिक कार्जवाही संबित है तो उसका उपणमन नहीं होगा वह श्रंव नहीं होगी या उस पर किसी भी रूप में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पेड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के अन्य उपबन्धों के अपीन रहते हुए अंतरिती बैंक के द्वारा या उसके विरुद्ध जारी रखीं जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के अनुसार इस स्कीम के उपबन्ध उस देश में स्थित, किसी ऐसी आस्ति या दायित्व को जो अंतरक बैंक के उपक्रम के भाग हैं, अंतरिती बैंक की अंतरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्थयं नहीं रखते तो ऐसी भासिस या दायित्व के संबंध में अंतरक बैंक का कार्यंकलाप विहित तारीख से अंतरिती बैंक के तत्समय के मुख्य कार्यंपालक अधिकारी में त्यस्त हो जाएगा और वह कार्यंपालक अधिकारी ऐसी सभी शर्मितयों का प्रयोग कर सकेगा सथा ऐसे सभी कार्य और बातें कर सकेगा, जो प्रभावी रूप के इसके कार्यंकलाप के परिसमापन के योजन के लिए अंतरित श्रीया प्रयोगत की जा सकती या की जा सकती है। मुख्य कार्यंपालक अधिकारी ऐसा अंतरित वीरित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यंकलाप और तिष्ठित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यंवाहियां करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधिधी दार। प्रशेतित हों और उन नंग्रंथ में मुख्य कार्यंपालक विधिधी दार। प्रशेतित हों और उन नंग्रंथ में मुख्य कार्यंपालक विधिधी दार। प्रशेतित हों और उन नंग्रंथ में मुख्य कार्यंपालक

प्रशिकारी, या तो स्वयं या अपने हारा निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के हारा अंगरक वैंक शी श्राम्तियां वसूल कर सकेगा या उनके वायित्व का निर्वहन करेगा और उसके शुद्ध प्राथमों का अंतरिती वैंक को अंतरित कर देगा।

. अंतरक बैंक की बहियां बंद की जाएंगी और उनकी सुलता की जाएगी और तुलत-पत्न प्रथमतः 19 प्रगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा और तुलत-पत्न चार्टंडें लेखाकार तथा बार्टंडें लेखाकारों की किसी ऐसी फर्म द्वारा जो मारतीय रिजर्ब बैंक द्वारा इस प्रयोजन के शिए ध्रुनुमोदिन या नामनिर्दिष्ट की गंधी हो सुबरीक्षित और प्रमाणित कराए आएंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपकाशों के भनुसार तैयार की गमी अंतरक बैंक के तृजन-पत्न की प्रत्येक प्रति अंतरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पश्चान् यथासंभव भी प्रकार सेक से तृजन-पत्न या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समझ प्रस्तुत करने या उसकी प्रतियां कम्पनी रिजस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी कम्पनी रिजस्ट्रार के पास फाइल करने की या तृजन-पत्न और लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी भन्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 159 के उपकाधों के भनुषालन करने के लिए वार्षिक साधारण धिवनेयन बृजने की घोषा नहीं का जाएगी और तत्पश्चाद अंतरक बैंक के निदेशक बोर्ब के लिए उस धिवनियम की घारा 285 की भरेकानुसार धिवयेगन करना धावश्यक नहीं होगा।

- 4. 1-अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के परामर्श से निम्मिलिकित उपबंधों के अनुसार अंतरक बैंक की सम्मित्तयों और ग्रास्तियों का मूल्यांकन करेगा और दायित्वों की संगणना करेगा, ग्रथित्:—
 - (क) सरकारी प्रतिभृतिमों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकन बिहित तारीख़ की ठीक पूर्ववर्ती तारीख़ की विद्यमान भाजार वर्गे पर किया जाएगा।
- (स) (1) सरकारी प्रतिम् तियों का भूल्यांकन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंककारी विभिन्नमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी अधिस्चाना में अधिकचिल मिद्धांतों के अनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्याना रूप में किया जायेगा।
 - (2) केन्द्रीय मरकार की प्रतिभृतिमों जैसे इ.कघर-प्रमाण पत्न, ट्रेजरी सबत निक्षेप प्रमाण-पत्न और केन्द्रीय सरकार की लघु सचत योजना के अधीन जारी की गगी कोई धन्य प्रतिभृतियां या प्रमाण पत्नों की मृल्यांकन उनके अंकित मृल्य के भाषार पर या उक्त तारीख की तकद प्राप्त मृल्य के भाषार पर, इन दोनों में से जो भी उक्ततर हो, किया जायेगा।
 - (3) जहां किसी सरकारी प्रतिभृति जैसे जमीदारी उन्मूलन बंध-पल या अन्य सामान प्रतिभृति जिसकी बाबत मूल किस्तों में बेय है, का बाजार मूल्य प्रिमितिश्वित नहीं किया जा सकता है या किसी कारजवश यह माना जाता है कि बहु उसका उचित मूल्य प्रदिश्वित नहीं करता है या वह धन्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभृति का मूल्यांकन उतनी कम पर किया जायेगा जो संवत किए जाने वाले बकाया मूल और उसकी ध्याज की किस्तों की उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तें संदेय हैं, सरकार द्वारा जारी की गयी किसी प्रतिभृति के मूल्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है और जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिपक्तता है या वह मुमंगत बातों को ब्यान में रखते हुए युक्तियुक्त समजा जाता है।

- (ण) जहां किसी प्रतिभूति, शेयर क्रियन्त, बंघ-पत्न या प्रश्य विनिधान का बाजार मूल्य उसके श्रमाभान्य बातों से प्रभाषित हो जाने के कारण युक्तियुक्त नहीं जाना जाता है, वहां विनिधान का मूल्यांकन किसी युक्तियुक्त कालावधि के दौरान उसके ओसत बाजार मूल्यक के शाधार पर किया जायेगा।
- (घ) जहां किसी प्रतिपृति, शेयर या कियेंचर या प्रत्य विनिधान का बाजार मूल्य प्रश्निनिश्चित नहीं किया जा सकता है, वहां जारी करने वाले समृत्यान की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्धी पांच वर्षी के दौरान उसके द्वारा संदत्त लाभों और प्रत्य सुगंगत बात की ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे सूख्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।
- (क) वावों की तुष्टि के लिए प्राणित परिनरों भी प्रत्य सर्भा ज'गम सम्पत्तिंथों और किन्ही प्रास्तियों का मूल्यांकन उनके बाजार मृत्य पर वित्रा जायेगा।
- (म) फर्नाचर और पिक्सबर, स्टाक की लेखन सामग्री और मन्य ध्रास्तियां, यदि कोई हों का मूल्यांकन प्रति वही श्रक्षिकिल मूल्य के घाधार पर या बसूली योग्य मूल्य के बाधार पर, जो भी युक्तिपुक्त सममा जाए, किया जायेगा।
- (छ) प्राप्तमों, जिनके प्रत्नगंत कर की गरो और मिनिकाट पर भगतान की गरो हु डिया भी हैं, बही ऋणों और विधि प्राक्तियों की समीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जाएगी और प्रतिभृतियों जिनके प्रत्नगंत उनके प्रावरक के का में ब्रारित प्रतिभृतियों भी हैं अंतरितों बैंक द्वारा परेक्षित और सत्यापित हो जायगी। तत्पग्वाल् प्रथ्रिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रीणमों में वाँकित किए जायों ने प्रथात "वे प्रथ्रिम जिन्हों प्रच्छा और श्रासामी से बनुनो योग्य महा गरा है और "वे प्रथ्रिम, जिन्हों भागानी से बनुनो योग्य महीं माना गया है" और या जिन/की बसुनी बुवंत या गंकास्पद है।
- (1) इस स्कीम प्रयोजनों के निए दायित्वों के प्रत्यंत ऐसी सभी समाश्रित दायित्व भी है, जिसके निय बन्तिरिनी बैंक से विहित तारीख को या उनके प्रवान प्रशांस्वरं के आशे से उचित रूप से हिन करने को प्राणा या प्रवेक्षा को जा सकेगी।
- (2) जहां किसी धास्तिव का मूल्यांकन विहिन नारीख को ब्राधारिन नहीं किया जा सकता है, वहा वह भारनीय रिजर्व बैंक के धनुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी पश्चात्वतों तारीख को वसूली योग्य धास्ति के रूप में जान। जायेगा। किसी धास्ति के मूल्यांकन और या किसी ध्राप्ति के वर्गोकरण और/या किसी दायित्व के ध्रवधारण की वाबत अंतरिनी सैंक धौर धन्तरिक बैंक के बोच कोई ध्रसहमान है, तो यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निवेंसित किया जायेगा जिसकी राय अंतिम होती, परन्तु ध्रव तक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती तब तक अंतरिनी सैंक द्वारा मदों या उसके भाग का मूल्यांकन इस स्कीम के प्रयोजन के पिए ध्रनन्तिम रूप से ध्रप्ताया जायेगा।

ऐसा करना प्रावश्यक होने की देशा में रिजर्व वैंक के लिए ऐसी सकतीकी राय प्राप्त करना प्रावश्यक होगा जो यह प्रास्ति की ऐसी किसी सब के मूल्यांकन या बायित्व की ऐसी किसी मद के अवदारण के संबंध में गर्वित सबसे, प्रीर ऐसी राय प्रसिप्राप्त करने का व्यव प्रश्तरक वैंक की प्रास्तिमों में पूर्ण कर से देंग हो।। पूर्वेगामी ृज्यवस्थों के अनुसार आस्तियों का मूल्यांकन और वायित्वों का अवधार धोनों बैंकों ओर उसके सदस्थों और लेनवारों पर भावक्ककर होंगा।

- 5. धन्तरक बैंक की संपत्ति और ग्राह्तियों के अंतरिती बैंक की धन्तर होने के प्रतिफत स्वरूप अंतरिती बैंक इसे और निस्नलिखिल खण्डों मे बर्णित बिस्तार तक अंतरिक बैंक के दायित्वों का निर्वहन करेगा, धर्षात्:--
 - (क) विद्वित सारीख तक कर्मचारीनुद प्रतिभूति निक्षेप; सहित उस पर प्रतिभूत ध्याज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पाम अंत तक बैंक के किसी कर्मेचारी द्वारा जमा की गरी कोई धनशाश और विद्वित तशीब को मसी प्रत्य बाह्य बायित्व, जिसके प्रत्तर्गत निशेष नहीं हैं, संबत्त किए जाएंगा या उसकी पूर्ण व्यवस्था की जाएंगी।

स्पष्टीकरण

इस पैरा के प्रयोजन के लिए विहित तारीका तक निक्षेप पर देश व्याज संबद्ध निक्षेप का भाग माना जायेगा।

(का) प्रत्येक बचत बैंक काते या जालू काते या किसी बन्ध निक्षप की बाबत जिनके अन्तर्गत सावधि निअप, नकद ममाण -पत्न, मासिक निक्षेप, मोग या संक्षिप्त मूचना पर देय निक्षेप या प्रस्तरक बैंक के पास कोई प्रस्य निश्लेप चाह व किसी भी नाम से आने जाते हों और कोई अन्य काले जो अपण्ड (क) के प्रस्तर्गत नहीं ग्राते हैं जिसके धन्तर्गत इस स्कीम के अधीन देश मोमा तक स्थान भी है। शतरिती वैंक विहित तारीख को संबंधित धारक/कों के नाम में एक सल्समान औ वैसा ही जाता खोलेगा जिसमें विद्वित तारीख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए पैरा (4) में निर्विष्ट तथा मूल्यंकित ग्रास्तियों में से प्रत्येक स्वाते के संबंध में उपबन्ध प्रानुपातिक शेय मूल्य के रूप में जमा करगा और इस प्रकार मृत्योंकित उक्त प्रास्तियों में से वे प्राप्रिम जो प्रासानी से वसूल योग्य नहीं माने गए हैं, या इब्दत हैं या जिसकी वसूली शंकास्पद है, कोई भ्रन्य भास्तियाँ या मास्ति के भाग जो विहिन तारीख को मूल्योंकित नहीं हैं और भ्रत्य रकम जो ऊप खण्ड (क) में वर्णित संदाय या उपनन्धों के लिए अवेक्षित हैं, अवत्रगित किए जार्येने और इस प्रकार मूल्योकित उका प्रास्तियों में घन्तरक वैंस की जारी किए गए तारीखा 19 ग्रगस्त, 1989 के प्रक्रिस्थगन भ्रादेश के पैरा 2 के खण्ड (क)(1) के माधार पर किए गए संदायों की संकलित रकम जोड़ेगा।

परन्तु 19 मगस्त, 1989 को कारोगार की समाध्ति को या उसके पश्च तु और विहित शारी का के पूर्व किसी निजेर खाते से किए गए किसी संदाय की संगणना इस उन्हें रा के प्रजीत जमा की जाने वाली रकम के मर्दे की जाएगी और तदनुमा जमा की जाने वाली कम मानुपातिक शेवर होगी जिसमें ऐसा संदाय की रकम कम कर दी आएगी।

परम्तु यह और कि जहां अंशिरती बैंक को किसी विशेष चाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई तुक्तियुक्त संदेय है तो वह रिजर्थ बैंक के प्रतुमोदन से उत्पर खण्ड (ग) के प्राधार पर उस केव्ह में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेना जब कि प्रन्तरिती बैंक खाते में सही प्रतिशेष प्रभिनिश्चित नहीं कर लेता है।

स्पद्धीकरण

"ब्रामुपालिक" पद से, जहां तक वह उद्यस परा में ब्राता है ऐसी संबंधित रक्तमों के अनुपात में अभिन्नेत है जो 19 अगस्ब, 1989 का कारोजार की समास्ति पर बकाया सदेय है (विहित तारीख के टीक चूजवर्ती नारीख सक देय भ्याज सहित) औं जहां तक वह इस स्कीम में भ्रत्यक्ष प्राप्ता है, एसी सर्वेश्वत रकभी के अनुपात में प्रस्थित है जो संदाय का बितरण के क्षमय अकाया देय है।

- (ग) जनर खण्ड (ख) में निर्निदिष्ट जम। धनरामि विण् जाने के के पश्चान् अंतरितीं बैंक संभवतः कम से कम निलम्ब से किन्तु विहित तारीचा से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम प्रधिनियम, 1961 के प्रधीन स्थापित निक्षप की भा और प्रत्यय गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पश्चान् निगम कह। गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उम प्रधिनियम की धारा 18 की उपधार। (1) की अपेक्षाओं का प्रतुपानन किया गया है, और तत्यक्मान् जब भी उम प्रधिनियम को बारा 18 की की उपधार। (2) में निर्दिष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अंतरिती बैंक उस तारीच या तारीचा से जिसको रकम प्रप्त होती है, सान दिन के अंदर उस खाते में देय अनराणि के चिन्तार तक, उस प्रधिनियम की घारा 18 की उपधार। (2) के प्रनुपार जपर खण्ड (ख) में निर्दिष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु: -
- (1) बदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट कोई खाना अंद कर दिया गया है जा बह ऐसे समय पर जन्न उस जाने में जमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होनी है, परिपक्त हो गया है तो उक्त रकम के हकदार व्यक्ति को संदाय अंगरिती बैंक हारी नकद रूप से किया जायेगा।
- (2) विव लाण्ड (का) में निर्दिष्ट किसी कम के हकदार व्यक्ति का पता नहीं लगाया जा सकता है या उसका प्रासानी से पता नहीं जात पारहा है तो ऐसे व्यक्ति को देव रकम के किए उपबन्ध स्वयं निगम की बहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा नथा अंतरिती बैंक को किसी रकम का संदाय करना निगम के लिए धावपयक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिलप नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के अंतरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्त की बाबत संदाय करने का विनिय्वय नहीं कर निया है।
- (बा) बिहित नारीबा को अंतरिनी वैंक की समादन पूंती सम्पूर्ण रक्तम और ध्रापक्षिती को अंबून और शंकासाद ऋण के लिए उपबन्ध के रूप में माना जायेगा और अंतरक वैंक की ब्रान्य ध्रास्तियों में ध्रवक्षयण और अंतरक वैंक के सदस्यों के ध्रित्रकार अंतरिती वैंक के संबंध में ऐसे होंगे जोतीखे पैरा (6) में उपबन्धित हैं।
- निम्नलिकित की बाबत:—
- (क) पूर्वंबर्त पैरा के खण्ड (अर) में वर्णित पन्त्रेक लेखे की बाबत उस खण्ड और खण्ड (ग) के प्राधार पर किसी लेख, भवि कोई है, मेंशमा न किया गया प्रक्तियेष और
- (का) धांतरक मैंक में प्रत्येक शेयर का सामत जिसकी रक्षम का बिहित तारीख से टीक पूर्व प्रत्येक शेयर धारक के द्वारा या उसकी धोर से क्षेयर पूंजी के मुद्दे तमावत्त रूप में माना गया था या माने (।) के समुसरण में धांतरिती बैंक द्वारा की गया मान के मद्दे रक्षम संदत्त की बया बी, संग्रहण सेख के रूप में माना जाएगा धीर उसे मंतरिती बैंक की सिहयों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा धीर लेखा के विषद्ध संदाय निम्नलिखिन रीति में किया जाएगा, ध्रयति :--
- (1) (का) मंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित सारीख को मंतरक बैंक में झाल्यगित शेषर घारक के रूप में रिजिल्ड्रीकृत

- था (या जो इस प्रकार रिजाई इस किए जाने का हकदार होता है) ऐसे साराज्य या तरीजों से तीन माम के संबर जो विनिद्दिन्द की जाए या जाएं, ऐसे घेयर या घेयरों श्रीर बकाया मानों, यद कोई हों, की बाबत उसके हारा धर्मदत्त रह रही धन हुन रकम का संवाय करने की अपेक्षा कर सकेना और तत्मकात यदि यह अवश्यक परियाजीका है तो बड़ ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहित नर्राण्य भी संतरक बैंक के साधारण घेयर धारक के हप में रिजाई इस था (या जो इस प्रकार रिजाई इस किए जाने का हकदीर होता) ऐसी नर्राज्य या तराज्य से जो विविद्दिन्द की जाए, तीन मास के अंदर ऐसे घोयर पा शेयरों या बकाया मांगों यदि कोई हो, की बाबत असके द्वारा अनंदन रहरही अनाहून रकम का संवाय करने की घोषा कर सकेना।
- (क) भंगरक बैंक प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए, व्यक्तिकम की कालायधि के लिए छः प्रतिशत कार्यिक ब्याज सहित खंड (क) के अभान देय रकम के संख्य की मांग भीर उसे प्रवित्त करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेशा।
- (2) अंतरिती बैंक, अग्नियों, कय या मितिकाटा किए गए भुगतान, हुं जियों, यहां ऋणों और विविध ऋणों तथा अन्य अस्तियों भी बागत जो "ऐसे अग्निसों के रूप में जो आस ती से बसूली योग्य नहीं है और या बसुली के लिए दूर्यत या शकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है: या जो उपर पैरा 4 के आधार पर विहिन तारीख के पश्चात पूर्णता या भागता बसुली योग्य है या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हु, संदाय की मांग और उसे अविति कराने के लिए तभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा परन्तु यह और किसी कृष्ण या अस्ति की रकम 50,000 रुपये से अधिक है, तो अंतरिता बैंक भारतीय रिक्षये बैंक के अनुमोदन के बिना:—
 - (क) ऋग या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या उत्तराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या आस्ति को बहे खाते में नहीं डालेगा।
 - (का) उसे अंतरित किल्हीं प्रतिभृतियों का या उसके द्वारा ली गयी किसी अर्थित के विकास या अन्यमा व्ययत नहीं करेगा।
- (3) इसके अतिरिक्त, अंगरिता बैंक बैंक करी विनियमन अधिनियम, 1949 की आर. 45 ज के स.य भीर कंपनी आधिनियम, 1956 की धारा 543 के स.य भी पठित वकक री विनियमन अधिनेयम, 1949 की धारा 6450 के अधीन अंतरिती बक के जिसी संवर्तक, निवेशक, प्रवंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिणीत की गयी रकम यदि कोई हो, की माथ करने और उनका संदाय करवाने के लिए प्रयोक माने की परिस्थितियों को अ्यान में रखते हुए सभी उपलम्ध कार्यवाहियों करेगा।
- (4) श्रीतरिती त्रक, उपर्युक्त खंड (1),(2) श्रीर (3) में उल्लिखित सवीं के कारण प्रपन द्वारा की एवी असूलियों में से किसी समाधित दायित्व की बाबन, भीर रिजर्व बैंक के पूर्व प्रमुमोवन से किसी ऐसे दायित्व, चाहे वह समाधित हो या अत्यातिक, की बाबन जिसे उपर्युक्त पैरा (4) निर्वेश्वनों के प्रमुखर निर्श्वारित नहीं किया गया या भीर जो विहित तः रीख की या उसके परूच गू उवभूत हुआ है या जिसका पता चला है, संवाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरों 45क के श्रधीन उसके लिए किया गया उपयंत्र ध्रपर्यास्त हो उपयंश्व कर सकेगा।
- (5) प्रतिरिक्षी नैंक, उपर्युक्त खंड (1),(2) भीर (3) में अल्लिखत मदों के कारण अपने द्वारा की गयी वसू ियों में से, उस प्रयो-अनों के लिए उपगत क्यय की भीर भारतीय रिजर्व नैंक के

अनुमोबन से ऐसे प्रत्य व्ययों की जी उचित समझा जाए, उनमें से कटोती करने श्रीर उपर्युक्त खंड (4) के निबंधनों के अनुमार उसमें से रकम विनियोजित करने के परवास या ऐसे श्रतिणेय, यदि कोई हों, में से, जो ऐसे दिवस्तों की सीमा अंतिम रूप से श्रीमानिक्चत की जाने के पश्चात इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित समाधित दायिस्थों की बाधत अवंध में से अपलब्ध हो।

- (क) तिक्षेप बीमा श्रीर प्रत्यय गरंटी अधिनियम, 1961 की घारा 18 की उपधारा (2) के श्रधान श्रंपरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम श्रीर निगम द्वारा उपश्विम रकम, यदि कोई ही,का संदाय करेगा, श्रीर
- (ख) ऐरं निक्षेपकर्ताच्यों के मामले में, जिनकी यावत संतरिती बैंक द्वारा कीई रक्षम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संप्रहण खाते की बाबत मोध्य रक्षमीं का, और ऐसे निक्षेप-कर्ताचीं के मामले में जिनकी बाबत संतरिती बैंक द्वारा कोई रक्षम निगम से प्राप्त की गयी है, या निगम द्वारा उपबंधित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित मंदीय की बाबत सिगम की उक्त खाले से मोध्य रक्षमीं की उपर्युक्त उपबंद (क) के उपबंधीं के अनुमार पहले संवत्त किए जीन के परवात उक्के संग्रहण खाले में उन्हें मोध्य स्तिमीय यदि कोई हो, का संवाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को कोव्य रकाम, मदि ऐसा करना आवण्यक हो तो, अंतरिती वैक का बहियों में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा और प्रश्वय गरंटी निगम माधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खंड (क) में विनिविच्ट रीति से निगम को संवस की जाएगी। परन्तु यह और कि अंतरिती बैंक, उपर्युक्त खंड (ख) में विनिविच्ट संदाय उस खंड में करेगा:--

- (1) यदि पैरा (5) के खंड (य) में उल्लिखित तत्समान या समक्ष्य जाते को बंद नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रस्थय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्द नहीं हुन्ना है, भीर
- (2) यदि उक्त खाते को मंद कर दिया गया है या बह नक्रद भुगमान केलिए परिपक्ष्य हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खंड (5) के उपखंड (क) के निबंधनों के घनुसार निगम की णोध्य रकमों, और उस खंड के उपखंड (ख) के निबंधनों के घनुसार निक्षेपकर्ताधों के संग्रहण खाते में शोध्य रकमों की श्रेणी घापस में समान होगी, धौर यदि उनका संवाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उनमें समान घनुपास में कभी होगी।
- (7) इस पैरा के खंड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णतः उपबंधित किए जाने के पश्चास, श्रंसरिती बैंक, खंड (5) में निर्दिष्ट रफ़नों के उस श्रंतिगोष, खो उसके पास उपलब्ध हो, में से, श्रंतरक बैंक के भृतपूर्व श्रेयर-धारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हेंदु ऐसी रीति से श्रीर उम सीमा नक, जो नीचे विनिर्दिष्ट है, श्रामुपासिक संदाय करेगा;
 - (क) प्रथमतः सब द्याते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक श्रोतरक बैंक के भूतपूर्व श्रीधमान श्रेयरक्षारकों के बाते में शोध्य रकम, यवि कोई हो,
 - (क) द्वितीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक इतरक बैंक के भूतपूर्व सामाध्य शेयर-धारकों के खाते में शोध्य एकम, यदि कोई हो और उसके पश्चातः।

- (ग) स्ति। यतः सब खाते के लिए पूर्णतः संवाय किए जाने तक शंतरक बैंक के भूसपूर्व श स्यगित शेयरधारकों के खाते में गोध्य रकम, यदि कोई हो,
- (घ) उपर्युष्टत उपखंड (क), (ख) भीर (ग) में उल्लिखित सब रकम को पूर्णेकः संदत्त करने के पश्चात भ्रांतरिती बैंक के पास बाकी बच्च श्रीक्षणेय का भ्रंतरिक बैंक के भूतपूर्व सामान्य ग्रेथरधारकों के श्रीच भ्रान्यानिक वितरण किया आग्या:

परन्तु यह कि यदि कोई प्रथन उठना है कि उपर्युक्त किसी उपस्पष्ट में उल्लिखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भाश्तीय रिजर्श कैंक को निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उम पर विनिश्चय प्रतिम होगा।

- (8) इस पैरा में निर्दिष्ट संप्रहण खाने में सोध्य रकम के बारे में केवल संतरितों बैंक का वायित्व उस सोमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपविधित है।
- (9) विहत तारोख या ऐसी पूर्वत्तर प्रविध से, जो केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्थ बैंक से परामर्ण करने के पश्चात, इस प्रयोजन के लिए विनिर्धिट करे बारह वर्ष के प्रवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निर्विष्ट किसी ऐसी मद का, जो उस तारोख तक वसूल नहीं की जा सकी हो, मूल्यांकन घंनरिसो बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्थ से किया जाएगा और घंनरिसी बैंक, उक्त मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए, अवधारित कोई रकम इस पैरा के खंड (4) में निर्विष्ट दायित्यों को पूर्ति के लिए आवश्यक किसी ऐसी राशि की जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) और (7) में उपविधित कम और रोति ने उस तारोख तक बृकायों जाने से रह गयी हो, पहुई उन में से कटौती करके वितरित करेगा।
- (10) श्रंतरिती बैंक, पूर्ववर्ती (1), (2) और (3) में उल्लिखित मदों के कारण बसूल किए गए ऐसे धन को, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा अपेक्षा के किए जाने को संमावना नहीं है, अपने पास या किसी अन्य बैंक या बैंकों के पास ब्याज बाले निक्षेपों में, ऐसी रोति से और ऐसी अविध के लिए, जो सामले के तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निवेश के, विनिहित करेगा। प्राव्भूत क्याज को खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निविष्ट वायित्यों की पूर्ति के लिए उनमें उपवर्शित रोति से उपयोजित किया जाएगा।
- 7 फिसी प्रशिष्यक्त या विविधित संविदा में किसी प्रतिकृत बात के होते हुए भी, पैरा (5) में निबंधनों के प्रनुसार प्रतिरिती बैक के पास खोले गए।

भए छाते की बाबस ब्याज का संवाय किया जाएगा और उसके केवल उन या ग्रगलें उत्तरवर्ती पैराओं के उपबंधों के ग्रनुसार ऐसी वरों पर, जी भंतारती वैक ग्रनुज्ञात करे जमा किया आएगा।

- 8. कोई भी निक्षेपकर्ता या मंतरक बैंक का प्रश्य लेनवार, उसके प्रति मंतरक बैंक के किसी वायित्व की बाबत मंतरिक बैंक या मंतरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विदित सीमा के सिवाए, कोई मांग करने का हकवार महीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, मारतीय रिजर्व केंक्र या मंतरिती या मंतरक बक के खिलाफ किसी ऐसी बात के लिए कोई कद या मध्य विधिक कार्य-वाहिया नहीं होंगी जो इस स्कीम के मनुसरण में सदमावपूर्वक की नयी है या की जाने के लिए फाशयित है।

10 मंतरम बैंक के सभा कर्मकारी सेवा मैं बने रहेंगे और यह समझा फाएगा कि उन्हें मंतरिता बैंक द्वारा उसी परिश्रमिक भीर सेवा के उन्हीं निबंधनी और मार्ती पर निजुनत किया गया है जो 19 भगरत, 1989 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसी कर्म-बारियों को लाग थी।

पहुन्तुं यह कि धतरक वैक के ऐसे कर्मचरी, जिन्होंने अंतरक वैंक या धतरित वैंक की, उस तरीख़ के जिसकी यह स्कीम के द्वीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठोक धागामी एक मास के धवसान के पूर्व किसी भी समय अंतरिती वैंक के कर्मचारी न होने के धपने धागय के बारे में लिखित मुजना द्वारा मुखिस किया है प्रद्योकि विवाद अधिनियम, 1947 के उपवंदों के धर्धान ऐसे, प्रतिकर, यदि कोई हो, धीर ऐसे पेंगन, उपदान भविष्य निधि धीर सेवानिवृक्ति फायदे के संदाय के लिये हक्ष्यार होंगे, जो 19 धरनत, के बंद हाने के ठोक पहले धंनरक वैंक के प्राधिकरण नियमों के अर्धान सामत्व तीर पर अनुकोय हो।

परन्तु यह भौर कि श्रंतरक बैंक के ऐसे कर्नच रियों की बावन जिसके बारे मैं यह समझा जात है कि उन्हें श्रंतरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप मैं नियुक्त किया गया है, श्रंतरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएना कि उसने श्रंतरिती बैंक की सेवा मैं रहने के बीरान उनकी छंटनी की वणा मैं इस श्राधार पर छंटनी प्रतिकार के संदाय की दायित्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है श्रीर श्रंतरिती बैंक मैं उनके त्थानांतरण से विष्णित्व नहीं हुई है।

11. प्रांतरिकी बैंक, उस त.रीख से जिसको इस स्कीम को मज्य किया जाना है, तीन वर्ष से अनिधिक अवधि के अवसान पर, अतरक बैंक के कर्मचारियों को बही पारिअमिक और सेवा के वहां निबंधन और शर्ते संवाय या मंजूर करेगा जी प्रांतरिती बैंक के सस्सामान रेंक या प्रस्थिति के कर्मचारियों को, प्रंतरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों के समान या समतूत्य प्रंतरिक बैंक के उनत कर्मचारियों के पास प्रमृंतरण और अनुभव के अधीन रहते हुए लागू हों।

परन्तु यह कि यदि कोई गंका या मतभेद उत्पत्त होता है कि उक्त कर्मचारियों में से किशी की अहंताएं या अनुभव अंतरिती बैंक के तरसमान रेंक या प्रस्थिति के प्रत्य कर्मकारियों को प्रहेंताएं आप अनुभव अंतरिती बैंक के तरसमान या समतुष्य है या नहीं या वह अंतरिती बैंक के वेतनमान में कर्मकारियों का वेतन नियत करने के लिए अपन एं जाने वाले शिकात्वों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो गंका या मत्भेद को भारतीय रिजर्व बैंक को निधिष्ट किया जाएगा जिसका विनिष्ट्य अन्तिम होगा।

12. यथास्थिति , प्रतिरिक बैक या प्रांतरिता वैक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भिष्ठ निधि प्रीर / या उपदान निधि के न्यासी या प्रणामक, बिहित तरीख को या उसके परचात यथा संभव पीछ प्रतिरिती बैंक के लिए गठिन कर्मचारियों भिष्य प्रतिरिती बैंक के लिए गठिन कर्मचारियों के प्रांचय भिष्य प्रतिरिती बैंक निवेश दें, प्रतिरक्ष बैक के कर्मचारियों के फायवे के लिए न्यास में धारित सब धन प्रीर विनिधान प्रतिरित कर देंगे।

परन्तु यह कि ऐसे पश्चतात्तवर्ती ध्यासी विनिधानों के मृत्य में किसी कमी के लिए या विहित तारीख के पहलें किए नए किसी कार्य, उपेक्षा, या व्यक्तिकम की बाबस दायी नहीं होंगे।

13. ग्रंतिरती वैंक ऐसे विवरण ग्रीर जानकारी भारतीय रिजर्व वैंक को भेजेंगा, जो भारतीय रिजर्व वैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय-समय पर अपेक्षा करे।

1.4. मंतरिती दीक, श्रंतरक बैंक के कार्यकलाप का विवरण, ऐसे श्राह्म में भीर ऐसे कालिक मंतरालीं पर, जो मारतीय रिजर्व वैंक इस निमित्त विनिधिष्ट करं, अंक्षरक वैक के शेथरधारकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों का भेजा जाना तब रोका जाएगा जब रिजर्व वैक ऐसा निदेश है।

15. किसी ऐसी सुचना या धन्य समुचना के बारे में जिसकी धनित्ता बैंक बारा दी जाने की ध्रमेक्षा की जाती है, उस दथा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक रूप से दे दिया गया है, यदि धन्तरक कैंक की पुस्तकों में रिजस्ट्रोंकन पने पर, जब रूक कि कोई नया पक्षा धनित्ता बैंक की पुस्तकों में रिजस्ट्रोंकन पने पर, जब रूक कि कोई नया पक्षा धनित्ता बैंक की पुस्तकों में रिजस्ट्रोंकन नहीं, प्रेषिती को सम्बोधित किया गया है और उसे पूर्व-संदत्त सामान्य डाक से भेज दिया गया है और ऐसी सुचना उसे डाक में डाले जाने के पप्रवात/धाइतालीम घण्डे के अवसान पर तामील की गया समझा जाएगी। इसके धितरिकत किसी ऐसी सुचना या संयुचना को जो सार्वजनिक हित की हो, एक या धिक दैनिक सनाचार पत्रां में जिनका परिचालन ऐसे स्थान पर हो जहा बैंक ध्रमने कारबार का संव्यवहार कर रहा था था, विज्ञानित किया जाएगा।

16. यदि इस स्कांम के किसी उपबंध या तिर्वचन करते समय कोई यंका उत्पन्न होता है ता मामले को साम्ताय रिजर्व बैंक को निविच्ट किया जाएना श्रीर उसकी राय निक्ष्यमक होगी भीर अंहरितों विक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रत्येक बैंक के सभा सबस्यों, निक्षेपकर्ताओं और अंदर दारों तथा कार्यचारियों पर भी और और किसी अन्य व्यति पर, जिसका इन बैंक में से किसी के संबंध में कोई अधिकार या दायित्य है, आवकर होगी।

17. यदि इस रकीम केंड उपबंधीं की प्रभावी नरने में कठनाई उत्पन्न होती है तो केन्द्रीय सरकार, प्रमिरिक भीर भंतरिती बैंकी को या उनमें से किती की ऐसे निवेण जी इस रकीम से प्रसंगत न हो, जारा कर सकेगी, जो केन्द्रीय सरकार को मार्ताय रिजर्थ बैंक से परामर्श करने के परचात कठिनाई दूर करने के भयोजन के लिये भावस्थक या उपयुक्त प्रताह हो।

[सं. 17/5/89-- की फ्रो III(फ)]

S.O. 151(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said Section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur, with the Indian Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of subsection (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

- (1) The Bank of Thanjavur Ltd., Thanjavur shall be the transferor bank and the Indian Bank shall be the transferee bank.
- (2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationary, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferred bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside. India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the

laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August, 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregeing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit adn loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (1) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,
 - (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
 - (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
 - (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
 - (iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is pavable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the Seourity shall be valued at such

an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation

of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,
 - (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate. monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advance considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the dated the 19-8-1989 order moratorium issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this subparagraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transfered bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION:

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amount remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least poscibly delay but in any case not later than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of subsection (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that-

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to

- pay the amounts to the transferee bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferee bank.
- (d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:—

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

- (i) (a) the transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) the transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.
- (ii) the transferee bank chall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily replisable and/or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances

of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferce bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,

- (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
- (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (iii) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) the transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned is clause (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5)(a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) the transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount approriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.
 - (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act. 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided, for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made

or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned is clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till paymetn in full against all the accounts has been made; and thereafter
 - (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed no rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such carlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to m clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferce bank shall invest such moneys reansed on account or items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not inkely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such be appropriate periods as may regard to the facts and circumstances Bank of India of the case or as the Reserve may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (1V), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferce bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferoe bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferoe bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government; intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall

be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident lund and other retirement benefits as may be ordinarily, admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the habilty for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferce bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

- (13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.
- (14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at

such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.

- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places, where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinon shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any right or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17|5|89-B.O. III(b)]

का. आर. 152(अ): --केन्ब्रीय मरकार, बेककारो विनियमन प्रधिन्तियम, 1949 (1949 का 10), को धारा 45 की उपधारा (7) के ब्रन्सरण में पस्र सेन्द्रल बैक लिमिटेड, उत्तर परुर के बैंक घाफ डिण्डिया के साथ समामेशन को स्कोम के संदंध में, जो उक्त उपधारा के घड़ांन केन्द्रीय सरकार, द्वारा मंजूर की गयी है, 20 फरवरी 1990 को विहित सारीख के रूप में विनिर्दिष्ट करती है।

S.O. 152(E).—In pursuance of sub-section (7) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the 20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said subsection.

[No,17]7]89-B O,HI(i)(a)]

का.आ. 153(अ) :- - केन्द्रीय सरकार ने बैककारी विनियमन प्रधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के प्रधीन भारतीय रिजर्व बैंक कारा किए गए भाषेदन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के प्रभीन पश्र घ सेन्ट्रेस वैंक निमिटेड, उत्तर पहर

के संबंध में उक्त धारा 45 को उपधाश (2) के प्रधीन अधिस्यगन ग्रावेश किया है।

प्रीर भारतीय रिजर्न बैंक ने उक्त प्रक्षितियम की धारा 45 की उपधारा (4) बारा प्रदक्त प्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, बैंक भाफ इंडिया के साथ परुर नेन्द्रल बैंक लिमिटेड, उत्तर परुर के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

भीर रिजर्थ कें। ने उक्त धारा का उपबारा (6) के उपक्रकों के अनुमार उक्त रकाम का प्राध्य मंत्रधित बैंकों को भेजने के पश्चात् भीर उक्त रकाम को बाबन प्राप्त मुशकों और धाक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् बहु स्काम उपान्तरित का है भ्रांर देते मंजूर के लिये केन्द्रीय सरकार को भेजा है।

श्रव श्रतः केन्द्रीय सरकार ने उनन श्रविनियम की भारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदस गांक्तयों का प्रयोग करते हुए इसमें भागे धणित निबंधनों भीर गली के भधीन रहने हुए इस स्कीम की मंजूरी दे दी है।

- (1) परुर सेन्ट्रल बैंक लिभिटेड, उत्तर परुर धन्तरक बैंक होगा भौर वैंक भ्राफ इंडिया मैनरिती बैंक होगा।
- (2) ऐसी तारोख से जिसे केन्द्रीय सरकार उन्त द्राधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) के मधान इस प्रयोजन के लिये विनिर्दिश्ट करें (जिसे इसमें इसके परवात विद्वित तारीख कहा गया है) भन्तरक बैंक के सभी श्रधिकार, शक्षित्यां मांग, दावे, हिन, प्राधिकार, विलेषाधिकार, मान, ग्रास्तियां श्रौर जंगम श्रोर स्थावर सम्पत्ति जिसके श्रन्तर्गत भ-धृति के सभी भाषतनों या पट्टों या करागें द्वारा श्रारक्षित भीर उनमें भन्तविष्ट/ भाउकों घोर घन्य धनराणियों घीर प्रसंगविवाधों के प्रधीन परिसर जिसके श्रधान वे धारित हैं, सभी कार्यालय, फर्नीचर, विमोजित उपस्कर, संयंत्र, यंत्र घोर साधित, बहा, कागज-पत्र लेखन सामग्री स्टाक, घन्य स्टाक घोर गामाम, सभो ग्टाक विनिधान भेयर और प्रनिभित्यां, हाथ में भीर धनि-वहन में प्राप्य सभी हुंडियां, सभी हाथ की और लेखा की रीकड़ या बैकों के पास निक्षेप लेखा (जिसके अन्तर्गंत सार्ग पर या संक्षिप्त सुचना ंद धन भी है), बुलियन, सभी बही ऋण, बंधक, ऋण और प्रतिभृतियों के फायदे सहित अन्य ऋण या उसको कोई प्रत्याभृति अन्तरफ सैंक के कारबार के संबंध में सभी अन्य, यदि कोई हों, मन्यति अधिकार भी सभी प्रत्या-भृतियों के ग्रास्ति संबंधी फायदे, इस रकीम के श्रन्य उपबन्धों के श्रधीन रहते हुए भग्निरिती बैंक को अन्तरित हो आएंगे और उसकी सम्पत्ति भीर मास्तियां बन आएंगे घीर विहित तारीख से ही मन्तरक बैंक के सभी दायित्व, कर्तन्य और पायदे, इसमें इसके उपबंधित विस्तार तक मीर रीति में भन्तरिता बैंक के वायित्य, कर्तव्य भीर बाध्यताएं होंगे भीर बन जग्मे ।

पूर्वगामी उपबन्धों को व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव बाले बिना सभी संविधाएं विलेख, बंधपत, करार, मुकारना में, विधि प्रतिनिधित्व को मंजूरियों भीर किसी भा प्रकृति को अन्य निवर्षे जी विहित तारीख़ के रीक पहले आस्तिवसील या प्रभावणीत हों, भन्तरितो बैंक के विरुद्ध या उसके पक्ष में इसमें उनवंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होंगी भीर असे ही कार्यान्तित को जा सकेंगी मानो-भन्तरक बैंक के स्थान पर अन्यस्तों बैंक उपमें पक्ष कार रहा हो, मानो वे भ्रन्तरितो बैंक के पक्ष में जारों की गया। हों।

याँव विहित्त तारीख को अन्तरक वैंक द्वारा या उसके विरद्ध कोई वाद, अपील या किसी भी प्रवृत्ति को कोई अन्य विधिक्त कार्यवाही लंकित है तो उसका उपणमन नहीं होगा वह बंद नही होगी या उस पर किसी भी कप में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु वह इस स्कीम के प्रस्य उपवन्धों के अधीन रहते हुए अन्यरिती बैंक के क्षारा या उसके विरुद्ध जारी रखी जा राकेगी और प्रवन्ति की जा सकेगी।

यदि भारत से बाहर के किसी देश को विधि के प्रनुसार ६स स्कीम के उपवन्ध उस देश में स्थित किसी ऐसी श्रास्ति या वाधित्व की जो श्रन्त-रक बैंक के उपक्रम के भाग है, अस्तरितो बैंक को असरित या उसमें निष्ठित करने का प्रशाब स्वयं नहीं रखते तो ऐसी प्रास्ति या दायित्व के रॉबंध में प्रम्तरक बैंक का कार्य कताप बिहित ताराण्ड से प्रन्तरितो बैंक के तत्समय के मख्य कार्यपालक मधिकारी में त्यस्य हो जात्या ग्रीर यह कार्यपालक ब्राधिकारी ऐसी सभी शक्तियों का प्रयोग कर सकेगः तथा ऐसे सभी कार्य और बार्स कर सकेगा, जो प्रभावो रूप से इसके कार्यकलाप के परिस्तापन के प्रयोजन के लिए भन्तरक बैंक द्वारा प्रयुक्त का आ सकती या की जा सकतो है। मुख्य कार्यपालक मधिकारो ऐसा मन्तरण धीर निष्ठित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यथाहियां करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे देश की विधियों द्वारा अपेक्षित हों और उस संबंध में मुख्य कार्यपालक मधिकारो, या तो स्वयं या मधने द्वारा निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा मन्तरक वैंश की मास्तियां असल कर सकेगा या जसके वायित्व का निर्वहन करेगा धीर उसके गुरू भागमों का भन्तरिती बैंक को अन्तरित कर देगा।

3. अन्तरक बैंक की बहियां बद की जाएगी और जनकी तुलना की जाएगी और तुलन-पन्न प्रथमत: 19 अगस्त, 1989 को कारोबार की समाध्त पर तैयार किया जायेगा और तुनन-पन्न पार्टर्ड लेखाकार तथा चार्टर्ड लेखाकार तथा चार्टर्ड लेखाकारों को कियो ऐसी कई हारा जो भारतीय रिजर्व बैंक हारा इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित या नामनिर्दिष्ट को गयी हो स्परो- जिन और प्रमाणित कराए जाएगे।

पूर्वेगामी ैरा के उपबन्धों के घनुसार तैयार की गयी अन्तरक बैंक क्षुलन-पन्न की प्रत्येक प्रति अन्तरक बैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के परवाल् ययासंबद गोंद्र कस्पनों रिजस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और तस्मध्यात अन्तरक बैंक से तुलन-पन्न या लाभ और हानि लेखा तैयार करने या उसे सक्स्यों के समभ प्रस्तुन करने या उसकी प्रतियों कम्पनी रिजस्ट्रार के पास फाईल करने की या तुलन-पन्न भीर लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या कम्पनी श्रीधिनयम, 1956 की धारा 159 के उपबन्धों के अनुपालन करने के लिए वार्षिक सामारण प्रधिवेगन बुलाने की अपेक्षा नहीं को जाएगी और तत्यव्याल् अन्तरक बैंक के निदेशक बोर्ड के लिए उस श्रीधिनियम को धारा 285 की अपेक्षानुसार अधिनेशन करना आवश्यक नहीं होगा।

- 4. 1. मन्तरिती बैंक, अन्तरक बैंक के परामशे से निम्नलिखित उपबन्धों के मनुसार मन्तरक बैंक की सम्पत्तियों भीर मास्तियों का मूल्यांकन करेगा भीर वायित्वों की सगणना करेगा, मर्यात्:---
 - (क) नरकारी प्रतिभृतियों से निम्न विनिधानों का मृख्यांकन विहिन नारीका की ठीक पूर्ववर्ती तारीका को विद्यमान काजार करों पर किया जाएगा।
 - (च) (i) सरकारो प्रतिभूतियों का मूल्यांकन भारतीय रिजर्व वैक द्वारा बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए जारो का गयी प्रधिसूचना में प्रधिकथित सिद्धांतों के धनुसार विहित रीति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विद्यमान रूप में किया जायेगा।
 - (ii) केन्द्रीय सरकार की प्रतिमृतियों जैसे डाकघर-प्रमाण पन्न, ट्रेजरी बचन निक्षेप प्रमाण-पन्न और केन्द्रीय सरकार को लघू बचन योजना के प्रधीन जारो की गयी कोई घन्य प्रतिभृतियों या प्रमाण पन्नों की मूल्यांक उनके ग्रॉकन मूल्य के भाधार पर या जक्त तारीख को नकद प्राप्त मूल्य के भाधार पर, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, किया जायेगा।
 - (iii) जहां किसी सरकारी प्रतिभृति जैसे जसीदारी उन्मूलन पंध-पन्न या धन्य सामान प्रतिभृति जिसकी बाबन मन किक्तों में देश है, का बाबार प्रति मृत्य निश्चित नहीं

किया जा सकता है या किसी कारणवश गह माना जाना है कि वह उसका उचित मूल्य प्रदिश्ति नहीं करता है या वह प्रत्यथा उचित नहीं है, तो प्रतिभृति का मूल्यांकन उतनो रकम पर किया जायेगा जो संबंदा किए जाने वाले बकाया मूल और उपकी ब्याज की किस्तों को उस कालावधि को जिसके दौरान ऐसी किस्तें संदेय हैं, मरकार दौरा जारा को गया किया प्रतिभृति के मूल्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है दूँ भीर जिसकी वैसी ही या लगभग वैसी ही परिएक्का है या यह दूँ मुनंगत वालों को अपन में रखारे हुए युक्तियुक्त समझा जाना है।

- (ग) जहां किसो प्रतिभृति, शेयर डिबेंचर कंश्व-पत्र या घर्य वितिधान का बाजार मूल्य उसके प्रसानान्य बातों से प्रमावित हो जाने के कारण पुक्त नहीं जाना जाना है, वहां विनिधान का मूस्यो-कन किसो युक्तपुक्त कालावधि के दौरान उसके श्रीसत बाजार मृस्यक के घाधार पर किया जायेगा।
- (च) जहां किसो प्रतिभृति, शेयर या बिबेंचर या झन्य वितिधात का बाजार मूल्य अभिनिष्टितन को किया जा सहता है, वहां जारी करने याने समुद्धात को किसीय स्थित, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उनके द्वारा संबत्त लाओं और प्रत्य सुमात कातों की ब्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मूल्य को यदि कोई है, हिसाब में लिया जायेगा जो युक्तियुक्त मूल्य माना जायेगा।
- (क) दाओं की तृष्टि के लिए प्रजित परिसरों भौर प्रत्य सभी जगम सम्पत्तियों भीर किन्हीं प्रातियों का मूख्याकन उनके नाजार मूल्य पर किया अधिगा।
- (च) फर्तीचर और पिक्सवर, स्टाक्त को लेखन सामग्रा भीर भन्य भास्तियां, यदि कोई ही का म्र्यकित प्रति वही प्रधिक्तियां मूल्य के आधार पर या वसूनी योग्य के भाधार पर, जो भी युक्तियुक्त समक्षा जाए, किया जायेगा।
- (छ) अप्रिमीं, जिनके अन्तर्गन का की गया और निर्धाहाट गर भूग-तान की गया हुडिया भी हैं, बहां ऋगों और विधि आस्तियों की समीका अन्तरिनों बैंक द्वारा को जाएगा और प्रतिभृतियां जिनके अन्तर्गन उसके अवश्यक के क्य में धारिन प्रतिभृतियां भी हैं, अन्तरितों बैंक द्वारा परें जिन और संस्थापित हो जाएगी। नत्त्रस्वात् अप्रिम जिनके अन्तर्गत उनके भाग भी हैं जो श्रीणयों में वर्गीकृत किए आएंगे, अर्थान् "वे अ्थिम जिन्हों अभ्यान भीर आसानों से वसूलों योग्य माना गया है और" "वे अरिमत, जिन्हों आसानों से वसूलों योग्य नहीं माना गया है" और/या जिनकी वसुलों कुबंत या शंकास्पद है।
 - (i) इस स्कीम प्रयोजनों के लिए वायितकों के प्रक्षांत एंसी सभी समाक्षित वायित्व भी हैं, जिनके लिए प्रक्तारेनी बैंक से विहित तारीका को या उसके पश्चास् प्रपने स्वयं के स्नोतों से उचित कप से पूर्ति करने की प्राशा या प्रपेक्षा की जा सकेगी।
 - (ii) जहां किसी प्रास्तिस्य का मूल्यांकत विहित ताराख को माधारित नहीं किया जा सकता है, वहां वह भारतीय रिजर्थ के के प्रतुमोदन से, भागतः या पूर्णतः किसी पश्वात्वर्ती तारीख को बमूली योग्य प्रास्ति के कप में जाना जायेगा। किसी प्रास्ति के मूल्यांकत प्रीर/या किसी प्राप्ता के बर्गोकरण प्रीर/या किसी वायित्व के प्रवधारण की बावा पन्तरिती बैंक भीर प्रन्तरक बैंक के बीच प्रसहसित है, तो यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक को निर्वोधात किया जाएगा जिनकी राघ प्रतिम होगी, परन्तु जब तक ऐसी राग्न प्राप्त नहीं हो जानी सब तक श्रन्तरिती बैंक हारा मदों या उसके भाग का

मृत्याकत इस स्कीम के प्रयोजन के लिए श्रन्तिम रूप से श्रपताया जायेगा।

ऐसा करना धावश्यक होने की दशा में रिजर्व बैंक के लिए ऐसी तकनीकी राय प्राप्त करना भावश्यक होगा जो यह आहित की ऐसी किसी फिसी मद के मूल्यांकन यो दायित्व की ऐसी किसी मद के अवधारण के संबंध में सम् चित समझे, और ऐसा राय अभिप्राप्त करने का व्यय अन्तरक बैंक की अस्तियों में से पूर्ण क्या से देय होगा। पूर्वगामी उपवन्धों के अनुसार भास्तियों का मूल्यांकन और वायित्वों का अवधारण दोनों बेकों और नदस्यों और लेनवारीं पर आवद कर होगा

5. श्रन्तरक बैंक की संपत्ति भीर श्रास्तियों के श्रन्तरिती बैंक को श्रन्तरिती बैंक को श्रन्तरिती के प्रतिकल स्थरूप श्रन्तरिती बैंक इसे श्रीर निम्नलिखित खण्डों में विणत विस्तार तक श्रन्तरक बैंक के दायिस्त्रों का निर्यहन करेगा, श्रथित्:--

(क) विहित तार्राख तक कर्मवारी बृन्द प्रतिभृति निक्षेपी सिहत उस पर प्रोदमृत ब्याज, यदि कोई है, के साथ उस वैक के पास ध्रन्तरक वैक के किसी कर्नचरी द्वारा जमा की गया कोई धनराणि धौर विहित तारीख को सभी प्रस्य बाह्य दायिल, जिसके अस्तर्गत निक्षेप नहीं हैं, संदत्त किए जाएं। या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएगी।

स्पष्णीकरण:---इस पैशः के प्रयोजन के लिए बिहिस तारिख सक निक्षेप पर देव क्याज संबद्ध निक्षेत्र का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्येक अनत बैंक खाते या चाल खाते या किसी भन्य निक्षेप की बाधत जिनके घन्तर्गत सावधि निक्षेप, भक्कद प्रमाण-पत्न, भासिक निक्षेप, मांग या संक्षिप्त सूचना पर देय निक्षेप या धन्तरिक बैंक के पास कोई धन्य सिक्षेप चाहे ये किसी भी नाम से जाने जाते ही ग्रीए कोई ग्रन्थ खाले जो खण्ड (का) के भन्तर्गत नहीं भाते हैं जिसके भन्तर्गत इस स्कीम के प्रधीन देय सीमा तक श्याज भी है। घन्तरिती वैंक विहित तरिशास को संबंधित धारक कों के नाम में एक सस्समान भीर बसा ही खात खोलेगा जिसमें विहित तर्राख को इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए परा (4) में निर्दिष्ट तथा मूल्यांकित मास्तियों में से अस्पेक खाते के संबंध में उपबन्ध ग्र.नुपातिक पीयर मूल्य के रूप में जमः करेगा भीर इस प्रकार मृष्याकित उक्त प्रास्तियों में स वे भविम ओ भासानी से बसूल योग्य नहीं भाने गए हैं, या डूबंत हैं या जिनकी बसूली शंका स्पद है, कोई अन्य ग्रास्तियां या ग्रास्ति के भाग जो विहित तारीख की मूल्यांकित नहीं है भीर भन्य रकम जो ऊपर खण्ड (क) में वर्णित संदाय मा उपबन्धों के लिए प्रपेक्षित है, भ्रपवर्जित किए, जाएंगे और इस प्रकार मुख्यांकित उक्त प्रास्तियों में प्रन्तरक वैंक को जारी किए गए नारी व 19 भगस्त 1989 के ग्रिश्चिश्च मादेश के पैरा 2 के खण्ड (क)(1) के फ्राधार पर किए नए सैदायों की संकलित रकम जोकेगा।

परन्तु 19 भगस्त, 1989 की कारोबार की समास्ति को य उसके पण्चात भीर विहित करी के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी किसी विहा की संगणना इस उप पैरा के भ्रष्टीम ज्ञाम की जाने बाली रकम के मदें की जाएगी भीर तबसुसार जमा की जाने बाली रकम भ नृपतिक रोयण होगी जिसमें ऐसे संदाय की रकम कम कम कर वी आएगी।

परन्तु यह और कि जहां अन्तरिती बैंक को किसी विशेष खात में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेह है तो बह रिज में कैंक के अनुसीदन से ऊपर खण्ड(ग) के आधार पर उस लेखें में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि धन्तरिती बैंक ऐसे काते में सही धतिशेष धिभिनिश्चित नहीं कर कर लेता है।

स्पर्दीकरण :-- :

"आनुपातिक" पद से, जहां तक वह इस पैरा में आता है ऐसा संबंधित रक्षमों के अनुपात में अभिनेत है जो 19 अगस्त, 1989 को कारो-बार की समाप्ति पर बकाया देव हैं। विहित तारीख के ठीक पूर्ववर्ती तारीख तक देव ब्याज राष्ट्रित) और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यन आता है, से ऐसी संबंधित रक्षमों के अनुपात में अभिनेत है जो संबाय या वितरण के समय बकाया देव हैं।

- (ग) ऊपर खण्ड(ख) में निर्निष्ट जमा धनराणि हिए जाने के पश्चात अन्तरिती बैंक संश्वतः कम से कम निलम्ब से किन्तु निष्टित तारीख से तीन मास तक निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के अर्धाम स्थापित निक्षेप नीमा और प्रत्यय गारंटी नियम अधिनियम की (जिस इसमें इसके पश्चात निगम कहा गय। है) एक मूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) की अपेकाओं का अनुपालन किया गया है, और तत्यवता जन भी उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) में निर्विष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, अन्तरिती बैंक उस हारीख या तरिखों से जिसको रकम प्राप्त होती है, सात दिन के अन्दर उस खाते में देव धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार अपर खण्ड(ख) में निर्विष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा। परन्तु:—
 - (i) यदि खण्ड (ख) में निर्विष्ट कोई खाता बन्द कर विसं गया है या वह ऐसे समय पर जब उस खाते में जमा के लिए एकम निगम से प्राप्त होती है, परिपक्त हो गया हैतो उक्त एकम के हकदार व्यक्ति को संवास अन्तरिखी बैंक द्वारा नकद रुप से किया जायेगा।
 - (ii) यि खण्ड (ख) में सिर्दिण्ट किसी रकम के हकदार व्यक्ति का पता महीं लगाया जा सकता है या उसका घरमानी से पता नहीं चल पा रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देव रकम के लिए उपवन्ध स्वयं निगम की बिष्यों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप से लेखा दिया जाएगा तथा अन्तरिती बैंक को किसी रकम का संवाय करना निगम के लिए आवश्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिल नहीं जाता है या उसका पता महीं मिल जाता है और निगम के अन्तरिती बैंक के माध्यम से उस व्यक्ति की बाबत संवाय करने का विनिक्ष्य नहीं कर लिया है।
- (घ) विहित तारीख को प्रस्तरिती बैंक की समावत पृंजी सम्पूर्ण रकम भीर रिक्षती को हुवंत सीर शंकास्पद ऋण के लिए उपवन्ध के कप में माना जाएगा और भग्नरक बैंक की घन्य भास्तियों में प्रवक्तयण भीर भन्नरक बैंक के सदस्यों के श्रीधकार भन्तरिती बैंक के सबंध में ऐसे होंगे जो तीचे पैरा (6) में उपविध्यक्ष हैं।

6. निम्निशिखित की बाबत :---

- (क्ष) पूर्ववर्ती पैरा के खब्ब (ख्र) में विणित प्रत्येक लेखे की आजत उस खण्ड भौर खण्ड (ग) के आधार पर किसी लेख यदि कोई हैं, में जमा न किया गया मिलगेष भौर
- (का) भारतरक नैक में प्रत्येक शियर को बानत जिसकी रक्षम की विक्षित तारी ख से ठीक पूर्व प्रत्येक शियर धारक के द्वारा या उसकी भीर से शैयर पूंजी के महे समावत रूप में माना गया था या भीचे (1) के भनुसरण में धन्तरिती बैक द्वारा की

गयी मांग के महे रकम संबक्त की गयी थी, संबहण खेळे के रूप में माना जाएगा और उसे ब्रक्तिसी बैंक गी बहिया में में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विषय मंदाय नि-चलिखिय रीति में किया जाएगा, ब्रथिय:——

- (1) (क) धानरिको अक प्रथमनः ऐसं व्यक्ति से जो विहित तारीख की प्रत्तरिक वैंक में प्रास्थिति होयर घारक के क्य में रिजिस्ट्री-कृत था (या जो इस प्रकार रिजिस्ट्रीकृत किए जोने का हकदीर होता है) ऐसी तारीख या तारीखों से तीन मास के प्रत्यर जो विनिधिष्ट की जाए या जाएं ऐसे योगर या योगरी प्रीर कीय काया मांगों, यवि कीद हों, की बावत उसके द्वारा ध्रसंदत्त रह रही प्रनाहुत रकम का संवाय करने की प्रपेक्षा कर सकेंगा और तत्राक्वित यदि यह प्रवश्यक पाया जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहत तारीख को प्रकारक बैंक के साधारण शेयरधारक के इप में रिजिस्ट्रीकृत था (या जो इस प्रकार रिजिस्ट्रीकृत किए जोने का हकदार होता) ऐसी तारीख या तारीख से जो विनिधिष्ट की जाए, तीन माम के प्रकार ऐसे सेयर या योगरों या सकाया मांगों यदि कोई हो, की बाबात उसके द्वारा धर्मदत्त रह रही प्रनाहन रकम का संवाय करने की प्रपेक्षा कर सकेगा।
 - (का) प्रस्तरक बैंक प्रत्येन मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिकम की कालाबधि के लिए छः प्रतिश्वस बाधिक व्यांक राहित खण्ड (का) के प्रश्नीत देय रकम के मंदाय की मांग धौर उसे प्रवतित करने के लिए सभी उपलब्ध कदम उठायेना।
- (2) प्रमारिती बैंक प्रशिमों, जय या मितिकाटा किए नेए भगतान हुंडिमों, बही ऋणों भीर विविध ऋणों तथा प्रत्य प्रास्तियों की वाबत जो "ऐसे भग्निमों के रूप में जो सामानी से वसूली मोग्य नहीं है और या बसूली के लिए कूबन या गंकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है : या जो ऊपर पैरा 4 के भ्राधार पर विश्वित तारीख के पश्चित पूर्णना या भागता वसूली योग्य हैं या हो सकते हैं, के संबंध में मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संदाय की मांग और उसे प्रवित्त कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवहीं करेगा परन्तु यह भीर किसी ऋण या भ्रास्ति की रक्षम 50,000 रूपये से भ्रधित है, तो भ्रम्तिरती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के धनुमोदन के बिना:
 - (क) ऋण या किसी घर्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करेगा या किसी ऐसे ऋण या घरित को बट्टे खाते में नहीं उस्लेगा।
 - (का) उमे अन्तरिती किन्हीं प्रतिभृतियों का या उसके द्वारा ली गयी किसी अन्तिन का विकय या अन्यया व्ययम नहीं करेगा।
 - (3) इसके श्रतिरिक्त, श्रन्तरितो बैंक, बैंक:री विनियमन श्रीधिनयम, 1949 की धारा 45ज के साथ और कम्पनी श्रीधानयम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पिटन बैंककारी विनियमन श्रीधिनियम, 1949 की धारा 45ठ के श्रीधीन श्रन्तरिकी बैंक के किसी संप्रवर्तक निदेशक, श्रवस्थक या श्रन्थ श्रीधिक री के विकट उच्च रण्यालय द्वारा नक्तमानी के रूप में श्रीधिनिणींत की गई रक्तम यदि कोई हो, की मांग करने श्रीर उनका संदाय सरवाने के लिए प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए सर्था उपलब्ध कार्यवाहियां करेगा,
 - (4) भ्रम्तिरिंगी बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1),(2) और (4) में उन्लिखित मदों के कारण भ्रमने द्वारा की गयी वस्तियों में से किसी समाश्रित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक के पूँ भ्रमुमोदन से किसी ऐसे दायित्व, चाहें बद समर्श्यित हो या प्रत्यातिक, भी साबत, जिसे उपर्श्वता पैरा (4) निवंधनों के भ्रमुसार विश्वतित नहीं किया गया था और जो विद्यति त रोज को

- या उसके पाचात् उद्भूत हुआ है या जिलका पता चला है, सदाय कर राहत या उस सीमा तक, जो पैरा ४५% के अधीत उसके लिए किया गया उपबन्ध अप्रीप्त हो, उपबन्ध कर संगेता।
- (5) अन्तरिती वैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) श्रीर (3) में उल्लिन-खित मों के कारण अपने द्वारा की गयी अस्तियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत व्यय की और भारतीय रिजर्य बैंक के अनुनोदन से ऐसे भन्य व्ययों की जी उल्लित समझा जाए, उनमें से कटौती करने और उपर्युक्त खण्ड (4) के निबन्धनों के अनुनार उसमें से रकम विनियोजित करने के पश्चार या ऐसे अतिणेष, यदि कोई हो, में से, जो ऐसे दायिखों की मीमा अंतिम रूप से अमिनिश्चित की जाने के पश्चार इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए यथा संगणित सम श्रित दायिखों की वाबत उपजन्य में से उपलब्ध हो।
- (क) निक्षेप बीम: और प्रत्यय गारिट निगम ब्रिधिनियम, 1961 की धार। 18 की उपधारा (2) के ब्रिधीन धन्तिरती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम और निगम द्वार। उपबन्धित रकम, यदि कोई हो, का संदाय करेगा, और
- (ख) ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में, िस्ता बाबत अस्तरिती बैक द्वारा कोई रकम निगन से प्राप्त नों की गांगी है, संप्रहण खाते की बाबत शोध्य रकतों का, और ऐसे निक्षेपकर्ताओं के मामले में जिनकी बाबत अस्तरिती बैक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा उपवन्धिम की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपवंधित मंदाय की बाबत निगम को उनत खाते से शोध्य रकतों की उपयुक्त उपवच्छा (क) के उपवच्छों के अनुसार पहले संवत्त किए जाने के प्रवच्त उनके संप्रहण खाते में उन्हें शोध्य अतिशेष यदि बोई हों, का संदाय करेगा।

परन्तु यह कि निगम को शोध्य रक्षम, यदि ऐसा करना आध्यक्ष हो तो, अंतरिती बैंक की बहियों में उपविन्धित की जाएगी तथा निक्षेप बोमा और प्रस्यय गार्रेटो निगम साधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में विनिविष्ट रीति से निगम को संदर्भ की अएगी । परन्तु यह और कि अंतरीति बैंक, उपर्यृष्ण खण्ड (ख) में विनिविष्ट संवाय उस दश में करेगा:---

- (1) यदि पैरा (5) के आरण्ड (खा) में उहिल खित तस्समान या समरूप खाते की बन्द नहीं किया गया है या वह उस खाते में प्रस्पय द्वारा भुगतान के लिए परिपक्त नहीं हुआ। है
- (2) यदि उक्त खाले को बाव कर दिया गया है या नह मकत भूगतान के लिए परिषक्त हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निवासनों के अनुसार निगम को मोध्य रकमों, भीर उस खण्ड के उपखण्ड (वा) के निवासनों के अनुसार निक्षेपकर्ताओं के संग्रहण खाते में भौड्य रकमों की श्रेणो श्रु भाषस में समान होगी, भीर यदि उनका सदाय पूर्णतः नहीं किया जासकता तो उतमें समान प्रमुमापत में कमी होगी।
- (7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिश्ट सदाय के लिए जाने या सूर्णतः उपसंधित किए जाने के पश्चाक्ष भातरिती बैंक, खण्ड (5) में निर्दिश्ट रक्षमों के उस अतिशेष, जो उसके पास उपलब्ध हो, में से, मंतरक बैंक के भूतपूर्व शेयर-आरकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो, हें तु ऐसी राति से और उस मीमा तक, जो नीचे विनिर्दिश्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा-→
 - (क) प्रथम तः सब जाते के लिए पूर्ण तः संदाय किए जाने तक श्रीतरक बैंक के भृतपूर्व श्रीधमान श्रीयरधारकों के जाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,

- (ख) दिलोयतः गत्र खाते के लिए पूर्णं सः संदाय किए जान सक श्रंतरक बैंक के भूभपूर्व सामान्य शेयर-धारकों के खाने में शोध्य रकम, यदि कोई हो भीर उसके पश्चात् ।
- (ग) मृतीभतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने सक ग्रंतरक बैंक के भूतपूर्व शास्यागित शोयरधारशीं के खाने में शोध्य रकम, यदि कोई ही,
- (क) उपर्युक्त उपखण्ड (क), (ख) और (ग) में उरिलखित सब रकम को पूर्णतः संदत्त गकरने के पश्चात संनिरितों बैंक के पास बाकी बसे प्रक्षिणेय का संतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य जैयरकारकों के बीच प्रानुपालिक जिल्ला किया जाएगा।

परम्तु यह कि अदि कोई प्रश्न उठता कि उपर्युक्त किसी उपस्थापक में उत्तिलखित खाते के लिए कोई रकम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारताँय रिजर्व बैंक को निर्दिष्ट किया आएगा जिसका उस पर विनिक्ष्य मंतिम होगा।

- (8) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खाते मे शोध्य रकम के बारे में केवल शंतरितों बैंक का वायित्व उम्म सीमा तक समझा चाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है।
- (9) बिहित नारीख या ऐसी पूर्वतर प्रविध से जी केन्द्रीय संवतर भारतीय रिजर्व बैंक से परामणे करने के पण्यान, प्रयोजन के लिए विनिर्दिष्ट करे, बारत वर्ष के धवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निर्दिष्ट किसी ऐसों मद का, जो उस तारीख सक बद्दल नहीं की जा सकता ही, मूल्यांकन प्रतिरिती बैंक द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामणे से किया आएगा ग्रीर अंतरिती बैंक, उक्त मूल्यांकन की ध्यान में रखने हुए, अवद्यारित कोई रकम इस पैरा के लोड (4) में निर्दिष्ट दाथिलों की पूर्ति के लिए भावप्रथक किसी ऐसों राणि को जो उपर्युक्त खण्ड (5), (6) भीर (7) में उपर्यद्यात कम भीर रीति से उस तारोंच तक चुनाई जाने से रह गई हो, पहले उनमें से कटौतो करके वितरित करेगा।
- (10) अंतरिती वैंक, पूर्ववर्ती खण्ड (1), (2) घौर (3) में उहिल- खित सदों क कारण वसूल किए गए ऐसे घम को, जिनकों तुरल संवाय के लिए उसके द्वारा घेपेशा किए जाने को सम्धावना नहीं है, धपने पास या किसी घन्य बैंक या बैंक के पास व्याज वासे निक्षेपों में, ऐसी रीति से घौर ऐसो घवधि के लिए, जो मामले के सव्यों घौर परि- स्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे, विनिहित करेगा। प्रोद्भूत व्याज को खण्ड (4), (5), (6) घौर (7) में निर्विष्ट दायित्वों को पूर्ति के लिए उनमें उपर्वित्त रीति से उपयोजित किया जाएगा।
- 7. किसी प्रिनिच्यक्ति या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकृत बात के होते हुए भी, पैरा (5) के निक्षी के प्रमुसार अंतरितों वैक के पास खाते खोले गए नए खाते को सत्वत स्थाज का संवाय किया जाएका प्रीर उसके केवल उन या अगले उत्तरकर्ती पैराओं के उपबंधीं के अनुभार ऐसी वरों पर जो अंतरिती वैंक अनुभार एसी वरों पर जो अंतरिती वैंक अनुभात कर जमा किया जाएगा।
- 8. मोर्ड भी निशेषकर्ता या अंतरक बैंक का अन्य लेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंसरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहिन सीमा के लिवाए, कोई मांग करने का हकवार नहीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या श्रेतरितों या शंतरक बैंक के खिलाफ किसी एँसी बात के लिए कोई बाद या ग्रन्थ विधिक कार्य-बाहियां नहीं होंगाँ, जी इस स्कीम के श्रनुसरण में सदभावपूर्वक का गर्यों है या पाँकों जाने के लिए श्रावायित है।

10. जंतरक बैंक के सभाँ कर्मवारी सेवा में बने रहेंने और यह समझा जाएगा कि उन्हें भंतरिनी बैंक द्वारा उसी पारिश्रमिक भीर सेवा के उन्ही निबंधनों भीर मतौं पर नियुक्त किया गया है जो 19 ग्रगस्त, 1989 को कारबार बंद होने से ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों को लागू थीं।

परन्तु यह कि मंतरक बैंक भे एँसे कमेंचारी जिन्होंने मंतरक बैंक था मंतरितों बैंक को, उस तारीख के, जिसको यह स्कॉम केन्द्रॉय सरकार द्वारा संजूर किया गया है, ठीक मागामी एक मास के मन्सान के पूर्व किसी भी समय मंतरिती बैंक के कमेंचारों कहोने के मपने माणय के बारे से लिखिल सूचना द्वारा सूचित किया है, भौदोगिक विवाद मिनियम, 1947 के उपवन्धों के मधीन एँसे प्रतिकर, यदि कोई हों, मीर एँसे पेंशन, उपवान भविष्य निश्च मौर सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के लिए हकवार होंगे, जब 19 1989 को कारबार के बंद होने के ठीक पहले अंतरक बैंक के माधिकरण नियमों के मधीन सामान्य तौर पर मनुत्रीय हो।

परने यह भीर कि अंतरक बैंक के एसे कर्में हियों को बाबत, जिनके बारे में यह ममक्षा जाता है कि उन्हें मंतरिती बैंक के सार कर्में कारियों में रूप में नियुक्त किया गया है, अंतरिती बैंक के बार में भी यह समझा जाएगा कि उसने मंतरिती बैंक की सेवा में रहने के दौरान उनकी छटनी की दया। में इस भाषार पर छटनी प्रतिकर के संवाय का वाबित्व लिया है कि उनकों सेवा निरंतर नहीं रही है भीर अंतरिती बैंक में उकके स्थानात्करण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. धंतरिती बैंक, उस तारोख से जिसको इस स्कीम को मंजूर किया जाना है, तीन वर्ष रो भनिधक प्रविधि के अवसान पर, भंतरक केंक के कर्मचारियों को वही पारिश्रमिक भौर सेवा के वही धंधन भौर शर्ते केंक के तत्समान रोंक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को, धंतरिती बैंक के तत्समान रोंक या प्रास्थिति के कर्मचारियों को, धंतरिती बैंक के ऐसे भन्य कर्नचारियों के समान या समनुख्य भंतरक बैंक के उक्स कर्मचारियों के पास भर्तेनाएं भौर भनुभव के प्रधीन रहने हुए, लागश्र हों।

परम्मु यह कि यदि कोई गंका या मनमेव बराजन होता है कि उनत कर्मचारियों में से किसी की अहुताएं या अनुभव अंतरितों बेंक के 'तत्समान रेंक या प्रास्थित के प्रत्य कर्मचारियों को प्रहेनाएं भीर प्रमुभव के समान या समतुष्य है या नहीं या वह प्रंतरिती बैंक के बैतनमान में कर्मचारियों का बेतन नियत करने के लिए प्रपनाए जाने बाले सिकातों की प्रक्रिया के संबंध में है, तो गंका या मतभेव की भारतीय रिजर्व बैंक की निर्दिष्ट किया जाएगा जिसका उत पर विनिध्लय प्रस्तम होगा।

12. वथास्थिति, अंतरक बैंक या मंतरितों बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निष्ठि / ग्रीर या उपदान निष्ठि के स्यासी या प्रशासक , विहित तारीक को या उसके परचात यथासंभव शीझ , मंतरितों बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निष्ठि भीर / या उपदान निष्ठि के न्यासा को, या भव्यथा, जैसा भंतरित भैंक निर्देश दें, भंतरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए स्यास में धारित सब धन भीर विनिधान भंतरिक कर देंगे।

परन्तु यह कि एैसे पश्चातकर्ती स्थासी, विनिधानों के मूल्य में किसी कभी के लिए या विहित, शारीचा के पहले किए गए किसी कार्य, उपेक्षा, या व्यक्तिजम विकादारी नहीं होंगे।

13. अंतरिती बैंक, ऐसे विवरण भीर जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक की भेजेगा, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्काम के कार्या-त्थित करने के सम्बन्ध में समय-समग्र पर अपेक्षा करे।

14 मंतरिती नैक, मंतरक मैंक के कार्यमालप का विवरण ऐसे प्रापक में और ऐसे कालिक अंतरालों पर, जो भारतीय रिजर्व नैक इस निमित्त विनिर्दिष्ट करें, मंतरक नैक के सेम्प्रसाहकों को भेजेगा। ऐसे विवरणों न भेषा जानातब रोका कं.येगा अस्र रिप्तः वैक ऐसा निवेश दे।

15 किसी ऐसी सूचना या अन्य संसूचना के बारे में, जिसकी मंतिरतीं बैंक द्वारा दी जाने की अपेक्षा की जाती है, उस बणा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्बक्ष रूप से दे दिया गणा है, यदि मंतरक बैंक की पुल्तकों में रिजस्ट्री छन परो पर, जब नक कि कोई नया पता अंतरिर्ता बैंक की पुल्तकों में रिजस्ट्री छन परो पर, जब नक कि कोई नया पता अंतरिर्ता बैंक की पुल्तकों में रिजस्ट्री छन न हो, प्रेरिती को सम्बोधित किया गया है और उसे पूर्व-तंदस सामाना अफ से भेज विया गया है, और ऐता मूचना उसे उक में उने जाने के पश्वता अप्रवात मण्डे के अवसान पर नातीन का गई समझी जाएगी इसके अतिरिक्त, जिसी ऐती सूचना या संसूचना की, जो सर्वजनिक हित की हो, एक या अधिक दैनिक समझार पाने में, जिनका परिवासन ऐसे स्थानों पर हो चड़ा बैंत था। कारा र क संशावह र कररहा या, विज्ञापित किया जाएगा

17. यदि इस स्थीय के उपबंधों को प्रभावी करने में कोई कार-नाई उत्पर्य होता है तो केखीय सरकार, प्रांतरक ग्रीट अंतिकी बैंकों को या उनमें से किसी की, ऐसे निरेण, जो इस स्कीम से अर्धायत महो, जारी कर महेंगी, जो केबिंग सरकार को भारतीय रिजर्य बैंक से परामर्थ करने के पण्यास काठनाई दूर करने के प्रयोजन के सिए श्रीयश्यक या उपयुक्त प्रतीस हो।

S.O. 153(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Parur Central Bank Ltd., North Parur, with Bank of India.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of subsection (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Parur Central Bank Ltd., North Parur shall be the transferor bank and the Bank of India shall be the transferee bank.

480 GI/90-3

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (7) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights. claims, demands, interests, authorities, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities. or any guarantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferce bank; and as from the perscribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or o'her legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside Indian the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf realise any assets or discharge any

liability of the transferor bank and transfer the not proceeds thereof to the transferee bank.

(3) The books of he tansferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lav the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other puror to comply with the of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (I) The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely.
- (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
- (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.
- (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share. Achenture, bond or other investment is not considered

- reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and varified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as an asset realisable at a later date.

In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and or the classification of any advance and or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

(5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee

bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely:—

(a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside liabilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferee bank snall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro-rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery. any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amuont needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank.

Provided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-8-89 and before the prescribed date, shall be reckoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited shall be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferec bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferee bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION:

The term 'pro rata' shall, insofar as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amounts remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, insofar as it occurs elsewhere in this scheme, mean 'in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution'.

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been afforded, the transferee bank shall, with the least possible delay but in any case not late than three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation established under the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Section 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corneration, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within sevent days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sums due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that -

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount refererred to in clause (b) above cannot be found or is not readily traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be necessary for the Corporation to pay the amounts to the transferce bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferce bank.
- (d) On the prescribed date, the entire amount of the paidup capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferee bank, be as provided for in paragraph (6) below:—

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (i) below,

shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

(i) (a) the fransferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled

to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;

- (b) The transferee bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default,
- (ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferse bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor under paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) The transferee bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the nurpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount approriated therefrom in terms of

clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.

- (a) pay to the Corporation the amount received by the transferee bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
- (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferee bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the amounts due from the said accounts to the Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in cause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the balance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments prorate towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made:

- (b) in the second pace, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made and thereafter;
- (c) in the third place, the amounts, if any, due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
- (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pr rata among the former ordinary snareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferce bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferce bank shall distribute any amount of amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in inteerst bearing deposits with itself or with any other bank or banks in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferec bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferec bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferor bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the tarnsferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this sceme as been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferce bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferce bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferce bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transcror bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constituted for the transfeere bank, or otherwise, as the

transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

- (13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.
- (14) The transferee bank shall furnish to the shareholders of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such periodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

[No. 17|7|89-B.O.III(i)(6)]

का.भा. 154(भ):--केन्द्रीय सरकार, बैंककारी बिनियमन ध्रधिनियम, 1949 (1949 क. 10) की घारा 45 की उपधारा (7) के प्रमुसरण में बैंक भ्राफ तमिलनाड़ लि., तिष्ठनलवेशी के इंडियन ध्रोवरसीज बैंक के स.ध समामेलन की स्कीम के संबंध में, जो उस्त उपधारा के ध्रधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर की गयी हैं, 20 फरवरी, 1990 को विहित तारीख के रूप में विनिदिष्ट करती है।

[संख्या 17/7/89-वी. मो. III (iii)(i)]

S.O 154(E)—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies the

20th February, 1990 as the prescribed date in relation to the scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli with Indian Overseas Bank which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section.

[No. 17]7 89-BO. III (iii) (a)]

का आ . 155(म):~केन्द्रीय सरकार ने बैंककारी विनिधमन मधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के मधीन भारतीय रिअमें बैंक द्वारा किए गए माबेबन पर, उक्त धारा की उपधारा (2) के मधीन बैंक माफ तमिलतानु निमिटेड, तिहनलवेली के सबंध में उन्त धारा 45 को उपवारा (2) के मधीन मधिस्मगम मावेश निया है।

ग्रीर भारतीय रिजर्व बैंक ने उन्त प्रक्षिनियम की घारा 45 की उपधारा (4) द्वारा प्रवत्त प्रक्षियों का प्रयोग करते हुए, इंडियन भीवरसीज बैंक के साथ बैंक ऑफ तमिलन हु लिमिटेड, तिचनलवेजी के समामेलन की स्कीम तैयार की है।

भौर रिजर्व बैंक ने उन्त धारा की उपधारा (6) के उपबंधों के मनु-सार उक्त स्कीम का प्रारूप संबंधित बैंकों की भेजने के पश्चास भौर उन्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुकायों और प्राक्षेपों पर विचार करने के पश्चात वह स्कीम उपान्तरित की है भौर इसे मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार की भेजा है।

प्रम भनः केर्द्राय सरकार ने उक्त प्रशिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रवत्त प्राप्तियों का प्रयोग करते हुए इसर्वे आगे विणित निवंधनों और शर्तों के प्रधीन रहते हुए इस स्कीम को मंजूरी देंदी है।

- (1) बैंक भाफ तिमलनः बुलिमिटेड, तिकृतलवेली मंतरक वैंक होगा मौर इंडियन भोवरसीण वैंक मंतरितो बैंक होगा।
- (2) ऐसी क्षारी का से जिसे केन्द्रीय सरकार उन्त प्रधिनियम की घारा 45 की उपधारा (7) के प्रधीन इस प्रयोजन के लिए बिनिविष्ट करें (जिसे इसमें इसके पश्चात विहित तारीश्व कहा गया है) श्रीतरक ं के सभी, अधिकार, शक्तिमा, माग, वामे, हित, 'प्राक्षिकार, विशेवा-लाभ, भारियाँ भीए जंगम भीर स्थावर सम्पत्ति जिसके श्रंतर्गत भू-धृति के सभा भायतनी या पड़ों या करारी द्वारा भारक्षित मंतर्विष्ट।भाटको भीर भरम धनराणियो भीर प्रसंग-विवासों के सधीन परिसर, जिसके अधीन ये धारित हैं, सभी कार्याक्रय फर्नीचर, विशोजित उपस्कर, संग्रंत, ग्रंत भीर तक्षित्र, बंहो, कागज-पद लेखन सामग्री स्टाक, ग्रन्य स्टाक ग्रीर समान, सभी स्टाक विनिधान गोयर भीर प्रतिभृतियां, हाथ में भीर प्रभिवहन में प्राप्य सुभी हुंडियां, सभी हाय को भीर लेखा को रोक्ष वा बैंकों के पत्स लेखा(जिसके मंतर्गेश मांगपर या संक्षिप्त भूवना पर धन भी है), बुलियन, सभी बढ़ा ऋपा, बंधक, ऋषा भीर प्रतिमृतियों के या उसकी कोई प्रत्याभृति अंतरक सहित ग्रन्थ ऋण केकारकार के संबंध में सभी श्रन्य, यदि कोई हो, सम्पत्ति ग्रीर सभी प्रत्याभृतियों के प्रास्ति संबंधी के प्रन्य उपबंधीं के अधीन रहते हुए अंतरिती वैंक की कोए उसकी सम्पत्ति ग्रौर **प**्रास्तियो हो जायेंगे जायेंगे और विहित तःरीख सेही पंसरक बेंक के सभी पायिला, भौर फायवे, इसमें इसके पश्वात उपवधित विस्तार कर्लच्य रीति में ग्रंतरिती बैंक के दायित्य, कर्तेष्य भोर बन ज।येंगे। भीर होंगे

पूर्वनामी उपबंधों की ध्यापकता पर प्रतिकृत प्रभाव काले बिना सभी संविदाएं, जिले दा, अंधीज, करार मुख्यातारनामे, विविध प्रतिनिधित्व की मंजुरियों और किसी भी प्रकृति की प्रस्य लेखतें जी विहित तारी हा

के ठीक पहले पारितवलील या प्रमावशील हों, प्रांतरिती बैंक के विरद्ध या उसके पक्ष में इसमें उपवंधित विस्तार तक और रीति में प्रभावशाली होगी और जैसे ही कार्योन्तित की जासकोंगी मासो प्रंतरिक बैंक के के स्थान पर अंतरिती बैंक उसमें पक्षकार रह ही, मासो वे प्रंतरितो बैंको उसमें पक्षकार रह ही, मासो वे प्रंतरितो बैंको

यदि विहित तारीख की भीतरक बैंक हारा या उसके विरुद्ध कीर्द बाद, भ्रापील या किसा भी प्रवृत्ति की कोई भ्रम्य विधिक कार्यवाही संबित है तो उसका उपशमन नहीं होगा वह बंद नहीं होगी या उस पर किसी भी स्था में प्रतिकृत प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्नु वह इस स्कीम के सम्य उपबंधीं के भ्रधीन रहते हुए भ्रंतरिती बैंक के द्वारा या उसके बिक्क जारी रखी जा सकेगी भीर प्रवृतित की जासकेगा।

यवि भारत से बाहर के किसी देश की विधि के भन्तार इस **एकीम** के उपबंध उस देश में स्थित किसी ऐसी श्रास्ति या दायित्व को जो अंतरक बैंक के उपक्रम के माग हैं, अंतरिती बैंक को अंतरित या उसमें निहित करने का प्रभाव स्वयं नहीं रखते नो ऐसी भास्ति या पंथित्व के संबंध में मंतरक वैंक का कार्यकलाप विहित तारीख र्वेक के तरसमय के मनय कार्यपालक ग्राधिकारी में न्यस्त हो जाएगा और वर् कार्यपालक प्रधिकारी ऐसी सभी क्रांक्सियों का प्रयोग कर सकेगातथा ऐसे सभी कार्य भीर बालें कर सकेगा, को प्रभावो रूप से इसके कार्यकलाय के परिसमान्य के प्रयोजन के लिए **बांतरक बैं**क हारा प्रयुक्त की जासकती या की जासकती है। महय कार्यपालक मधिकारी ऐसा मंतरण सीर निहित करने के प्रयोजन के लिए ऐसी सभी कार्यविद्यां करेगा, जो भारत के बाहर किसी ऐसे वेश का विधियां द्वारा प्रपेक्षित हों भीर उस संबंध में मुख्य कार्यपालक प्रधिकारी, या तो स्थयं या भपने द्वारः निमित्त प्राधिकृत किसी व्यक्ति के द्वारा संतरक बैंक की झास्तियां वसूल कर सकेगा या उसके दायित्व का निर्वेष्ट्रन करेगा भीर उसके शुद्ध ग्रांगमों का भौतिरती बैंक को अंतरित कर देगा।

3. अंतरक बैंक की बहियां बंद की जाएंगी भीर उनकी मुलना की जाएंगी भीर तुलन-पन्न प्रथमत: 19 अंगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर तैयार किया जायेगा भीर तुलन-पन्न बार्टबं लेखाकार तथा बार्टबं लेखाकारों का किसी ऐसी फर्म द्वारा जो भारतीय रिजर्य बैंक द्वारा इस प्रयोजन के लिए अन्में की नामनिर्विष्ट की गयी हों संपरीक्षित भीर प्रमाणित कराए जायेंगे।

पूर्वगामी पैरा के उपबंधों के यनुसार तैयार की गयी मंतरक विक के तुलक-पक्ष की प्रत्येक प्रति अंतरक वैंक द्वारा प्राप्त हो जाने के पक्ष्वास् यथासंभय शीघ कम्पनी रिज-हार के पास फाइल की जाएगी भीर तराम्बान प्रंतरक वैंक से तुलक-पन्न या लाभ भीर हानि लेखा तैयार करने या उसे सदस्यों के समझ प्रस्तुत करो या उसकी प्रतियां कम्मनी रिज-हार के पाम फाइल करने की या पुरत्य-पन्न भीर लेखों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए या किसी ध्राय प्रयोजन के लिए या किसी ध्राय प्रयोजन के लिए या कम्मनी प्रधितियम, 1956 की सारा 159 के उपवंधों के अनुपालन करने के लिए वाविक साधारण अधिवेशन बुलाने की ध्रेपसा नहीं की जाएगी भीर सत्यक्षात अन्तरक वैंक के निवेशक बीई के लिए उस प्रिधानियम की सारा 285 की अपेक्षानुमार अधिवेशन करना भावश्यक नहीं होगा।

- 4.(1) वितरिती बैंक, चंतरक बैंक के परामणे से निभ्निलिखित उपविधों के धनुमार चंतरक बैंक की सम्पत्तियों भीर ध्रास्तियों का मृत्यांकम करेगा और वायिखों की संगणना करेगा, प्रथति :---
 - (क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न विनिधानों का मूल्यांकम विहित तारी ख की ठीक पूर्वेवर्ती नारीख को विद्यमान कजार में वरों पर किया जाएगा।
 - (य) (i) सरकारी प्रतिभृतियों का मृत्योकत भारतीय रिजर्थ वैक द्वारा वैककारी यिनियमन प्रधिनियम, 1949 की घारा

- 24 के प्रयोजन के लिए जारी की गयी श्राधेसूचना में अधिकथित सिद्धांनों के श्रनुगार विक्ति राति में ठीक पूर्ववर्ती तारीख को यथा विश्वमान रूप में किया जाएगी।
- (i) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभृतियों जैसे डाकघर-प्रमाण-पत्न,
 द्रेजरी सकत निक्षम प्रमाण-पत्न और केन्द्रीय
 सरकार की लघु बचन यो अने के ग्रधीन नारी की गर्यो।
 कोई ग्रन्थ प्रतिभृतियों या प्रमाण-पत्न क: नृत्यांकल उनके अंकिन भूल्य के ग्राधार पर या
 उकत नारीख की नकद प्राप्त मूल्य के ग्राधार पर
 इन दोनों में में जो भी उच्चतर हो, किया
 जानेगा।
- (iii) जहां कि नी सरकारी प्रतिभृति जैसे जमींदारी उल्मृलन बंध-एत या धन्य सामान प्रतिभृति जिसकी याचन मूल किस्तों में देश हैं, का बाजार मृत्य श्रिमिनिवित नहीं फिया जा सकता है या किसी कारण-वश यह मान। नाना है कि वह उसका उचित मृल्य प्रदर्शिक नहीं करना है यह बहु ब्रन्यया उचित नहीं है, तो प्रतिभूति का गृत्यांका। उनली रकम पर किया अ।येगा जो संदल किए जानेवाले बकाया मृल्य और उराकी ध्याण को मिस्तों का उस कालावधि को जिसके किस्ने देव हैं, सरकार डारा दौरान ऐसी जारी की ।यो किसी प्रतिभूति के मृत्य को जिससे प्रतिभृति का संबंध है और जिसको वैकी हो या स्रगभग वसी ही परिषम्बनः है या वह पुसंगत बातों को ध्यान में रखते हुए श्वित्युक्त समझा जाता है।
- (ग) जहां कियो प्रतिभृति, शैयर डिवेंबर. वंध-पत्र या ग्रस्य विसिधान का बाजार मृत्य उसके ससःमान्य कानों से प्रभावित हो जाने के कारण जुक्तिपक्ष नहीं माना जाता बहां विकिधान का मृत्यांकन कियो प्रित्तपृत्र कालाविध के धौरान उसके और बाजार प्रवान के श्राधार पर किया जारेगा।
- (घ) जहां किसी प्रतिमृति, घेयर या विवेचर या प्रत्य विनिधान का बाजार मृत्य प्रभिनिध्चित नहीं किया जा सकता है, वहां आरो करने वाले समस्थान की विक्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान उसके द्वारा संदल लाओं और प्रत्य सुमंगत बानों को ध्यान में रखते हुए, केवल ऐसे मृत्य को यदि कोई है, हिमाब में लिया जायेगा जो गुक्तियुक्त मस्य माना जायेगा।
- (इ.) दावों की मुस्टि के लिए प्रजित परिस्रों और प्रन्य सभी जंगम सम्पक्तियों और किन्हीं ग्रास्त्रियों का मूल्यांकन उनके साजार मुल्य पर किया जायेगा।
- (च) फर्नीचर और पिक्सकर, स्टाक की लेखन सामग्री और प्रान्य ग्रास्त्रियों, यदि कोई हों का मृत्योंकन प्रति बही ग्रिक्षिकथित मृख्य के प्राधार पर या बस्की योग्य मृख्य के ग्राधार पर जो भी युक्तिबुक्त सभझा जाए, किया जायेगा।
- (छ) प्रशिमों, जिनके अंदर्गत कय को गयो और मितिकाटे पर भुगतान की गयी हुं हिया भी हैं, बहीं ऋणों और विधि धातित्यों की समीक्षा अंतरिती बैंक द्वारा की जःयेगी और प्रतिभृतियों जिनके अंतर्गत उसके आवरक के रूप में धारिस प्रतिभृतियों भी हैं, अंतरिती बैंक द्वारा परेक्षित और सन्यापित हो जायेंगी। तक्षक्षान धार्यम

भिनंक आर्थित जनके भाग भी हैं जो रोणिकें में वर्गीक्षत किए जार्थेके, अर्थात "वे अग्निम जिन्हें घच्छा और श्रासानी से बसूली योग्य माना गया है और" "वे अग्निम, जिन्हें आसाधी में बसूली योग्य नही माना गया है" और/या जिन्की बसूली हुबंत या संकास्पद है।

- (i) इस स्कीय प्राप्तेकां के लिए वासित्वों के अंतर्गत ऐसी सभी समाधित वासित्व भी हैं, जिनके लिए धन्तरिती बैंक से विहित तार्शिख को या उसके पण्यात् भपने स्वयं के स्रोतों से उचित रूप से पूर्ति करने की भागा या अपेक्षा की जा सकेगी।
- (गं) जहां किसी प्रस्तित्व का मृत्यांकत विहित तारोख को प्राधारित नहीं किया जासकता है, वहां वह भारतीय रिजर्व बैंग के अनुभोदन ने भागतः या पूर्णतः किसी पण्चानवर्ती हारीख को वसूनो योग्य अस्तिन के रूप में जाना आयेगा।

किसी आस्ति के मृत्यांकत और/या किसी घषिण के वर्गोक्षरण और या किसी वाधित्व के अवधारण की बाबत अंतरिती बैंक और घन्तरक मैंक के बीच कोई ध्रमहमति है, तो यह मामला भारतीय रिजर्ब बैंक को निदेशिक किया जाएगा जिसकी पाय अंतिम होगी, परन्तु जबतक ऐसी राय प्राप्त नहीं हो जाती सब तक अंतरिती बैंक द्वारा मदों या उसके भागका मृत्यांकत इस क्कीम के प्रयोजान के तिए ध्रनन्तिया कप से ध्रपनाया जायेगा।

ऐसा करना भावण्यक होने की दशा में रिजर्ब मैंक के लिए ऐसी तकर्वाकी राग प्राप्त करना आवण्यक होगा जो यह अस्ति को ऐसी किसी मद के भूल्यांकन या वायित्व की ऐसी किसी मद के भ्रवघारण के संबंध में समृचित समझे और ऐसी राग भ्रक्षिप्राप्त करने का व्यय भन्तर बैंक की भ्रास्तियों में से पूर्ण रूप से वेय होगा।

पूर्वगामी उपबंधों के श्रात्मार आस्तियों का मूल्यां-कन और दायित्वों का श्रवसारण दोनों सैंकों और उसके सदस्यों और लेनदारों पर शासद्वकर होगा।

5. भन्तर बैंक की सम्पत्ति और प्रास्तियों के अंतरिती यैक को भन्तरण होने के प्रतिकल स्वरूप अंतरिती बैठ हमे और निरुप्तितित खर्डों में विभाग विस्तार तक अंतरक कैंक के दायित्यों का निर्वेहन करेगा, प्रथित :----

(क) विहिन तारीख नक कर्मचारीबृत्य प्रतिभृति निक्षेपों महित उस गर प्रोदण्त ब्वाज, यदि कोई है, के साथ उस बैंक के पास धन्तरक यैंक के किसी कर्मचारी द्वारा जमा की गर्मा कोई घनराणि और जिहिन नारीख को सभी धरम बाह्य दायित्म, जिसकों अंगर्गन निशेष नहीं हैं. संदत्त किए जार्में या उनकी पूर्ण व्यवस्था की जाएरी।

म्पव्टीकरण:

इस परा के प्रयोधान के लिए विहित तारी ला तक निश्रीप पर देथ क्याची संबद्ध निश्रीप का भाग माना जायेगा।

(ख) प्रत्मेक बचत वैक खाते या चालृ खाते या किसी प्रान्य निक्षेप की बाबन जिनके अंतर्गन साविध निक्षेप, नकद प्रमाण-पत्न, मासिक निक्षेप, सां९ या संक्षिप्ल सूचना पर देय निक्षेप या ग्रन्तरक क्रेंक के पास कोई ग्रन्य निक्षेप चा ग्रन्तरक क्रेंक के पास कोई ग्रन्य निक्षेप चाहे थे किसी भी ने।म मे जाने जाते हों और कोई ग्रन्य खाते जो खन्ड 'क' के अंतर्गन नहीं ग्राने है जिसके अंतर्गन इस स्कीम के ग्रांशन देय सीमा तक ब्याख भी है। अंगरिनी बैंक विहित तारी ख को संबंधित घारकों

के नाम में एक तन्मपान और वैसा ही खाला खोलेग. जिसमें थिहित सारीख की इस स्कीम कि प्रयोधनों के लिए पैरा(ा) में निदिष्ट तथा मृल्योकित क्रास्तियों मे से प्रत्येव खाते के संबंध में उपबन्ध श्रानधातिक शेयर मस्य के रूप में जमा करेगा और इस प्रकार मुख्योकित उक्त म्रास्तियो में से वे प्राप्रिम जो आसानी से थसूल योग्य नही माने गए हैं, या दुर्बंस हैं या जिनकी बसूली शंकास्पद है, कोई अन्य प्रास्तियां या प्रास्ति के भाग जो विक्रित तारीख भो मूरूयाकित नहीं हैं और ग्रन्थ रक्षम जो अपर खण्ड (क) मेंवर्णित संशाय या उपर्वधों के लि अपेक्षित है, भ्रयवर्णित ं किए ज!वें।ेेे और इस प्रकार मुख्यांकित उनत शास्त्रियों में प्रस्तरक बैंक को जारी किए भए तारीख 19 प्रमस्त 1989 के प्रधिरुपमत श्रादेश के पैरा 🗈 के खण्ड (क) (1) के शाक्षार परकिए गए संदाशीं की संकलित रक्षम आधिया।

परंतु 19 घगस्त, 1989 को कारोबार की समाप्ति को या उसके परकात् मौर विद्यित तारीखा के पूर्व किसी निक्षेप खाते से किए गए किसी संबाध की संगणना इस उप पैरा के प्रधीन जमा की जाने वाली रकम के मर्दे की जाएगी भीर तदनुसार जमा की जाने वाली रकम आसुपालिक भेषर होगी जिसमें ऐसे संवाध की रकम कम कम कर दी जाएगी।

परंतु यह भौर कि जहां श्रंतिनिता बैंक को किसी विशेष खाते में की गयी प्रविष्टियों के सही होने के बारे में कोई युक्तियुक्त संदेह है तो वह रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऊपर खण्ड (ग) के आधार पर उस केखे में किए जाने वाले जमा धनराणि को प्रतिधारित कर सकेगा जब तक कि अन्तरिती बैंक ऐसे खाने में सही श्रितशेष श्रिमिनिश्चत नहीं बार लेता है।

स्पष्टीकरण :

"श्रानुपातिक" पद सं, जहां तक वह इस पैरा में श्राता है ऐसी संबंधित रक्षमों के अनुपात में अभिजैत है जो 19 अगस्स, 1989 को कारोबार की समाप्ति पर बकाया देय हैं (विहित तारोख के ठीक पूर्व-वर्ती तारीख तक देय अगाज गहित) और जहां तक वह इस स्कीम में अन्यक शाता है, से ऐसी संबंधित रकमों के अनुपात में अभिजेत हैं जो संदाय या वितरण के समय बकाया देय हैं।

- (ग) ऊपर खण्ड (ख) में विनिर्विष्ट जमा घनराणि दिए जाने के पण्यात् प्रतिरिती वैंक संभवतः कम से कम विलम्ब से किंतु विहिन तारीख से मीन माम नक निक्षेप बीमा धौर प्रस्पय गारंटी नियम अधिनियम, 1961 के प्रयीन स्थापित निक्षेप बीमा धौर प्रत्यय गारंटी नियम को (जिसे इसमें इसके पण्याम् निगम कहा गया है) एक सूची देगा, जिसमें सभी प्रकार से उस घिष्टित्यम की घारा 18 की उपघारा (1) की धंभेक्षाओं का प्रमुपालन किया गया है, धौर तत्पण्यात् जब भी उस प्रधिनियम की घारा 18 की उपघारा (2) में निविष्ट रकम निगम से प्राप्त हो, धौतरिती बैंक उस तारीख या तारीखों से जिसको कम प्राप्त होनी है, सात दिन के प्रवेप उस खाते में वैय धनराशि के विस्तार तक, उस अधिनियम की घारा 18 की उपधारा (2) के अनुसार ऊपर खपड़ (ख) में निविष्ट प्रत्येक खातों में जमा करेगा पण्याः—
 - (i) यदि खण्ड (ख) में निविष्ट कोई खाता बंद कर दिया गया है या वह ऐसे समय पर अब उस खाते में अमा के लिए रकम निगम से प्राप्त होती है, पिराक्व हो गया है तो उक्त रकम के हकवार व्यक्ति को संदाय अंतरिती बैंक द्वारा नकद रूप से किया जायेगा।

- (ii) प्रदि खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किनी रया के हकवार व्यक्ति का पता नहीं रागाया जा सकता है या उसका हामानी से पता नहीं चन पा रहा है तो ऐसे टाकिं को देश रकम के लिए उपबंध स्त्रयं निगम की वहियों में किया जाएगा और उसका पृथक रूप में लेखा थिया जाएगा तथा अंतरिती बैंक को किमी रकम का मंत्राय करना निगम के लिए आवण्यक नहीं होगा जब तक कि रकम का हकदार व्यक्ति मिस नहीं जाता है या उसका पता नहीं मिल जाता है और निगम के संतरिती बैंक के माध्यम में एग व्यक्ति की बाबत संदाश करने का विनिष्धय नहीं कर लिया है।
- (ध) बिहित ठारीख को अंतरिती बैंक की समादत्त पूंजी सम्पूर्ण रकम और धारिक्षती को इवंच और शंकास्पद ऋण के लिए उन्बंध के रूप में माना जाएना और अंतरिक बैंक की अन्य प्रास्तियों में अवक्षयण और अंतरिण बैंक के सदस्यों के अधिकार अंतरिती बैंक के संबंध में ऐसे होंगे जो नीचे पैरा (6) में उपबंधित हैं।

निम्नलिखिम की धाबत :--

- (क) पूर्ववर्ती पैरा के खण्ड (ख) में वर्णित प्रत्येक क्षेत्रे, की बाबत उस खण्ड धौर खण्ड (ग) के धाधार पर किसी लेखा, यदि जोई है, में जना न किया गया प्रतिभेष ; धौर
- (ख) अंतरक बैंक में प्रत्येक सेयर की बाजत जिसकी रक्षम को विहिन तारीख से ठीक पूर्व प्रत्येक सेयर धारक के द्वारा या उसकी और से सेयर पूर्णी के महे सनादत रूप में माना गया था या नीचे (1) के अनुसरण में अंगरिती बैंक द्वारा की गयो मांग के महे रक्षम संबत्त की गयो थी, संप्रहण लेखे के रूप में माना जाएगा और उसे अंगरिती बैंक की बहियों में उस प्रकार दर्ज किया जाएगा और लेखा के विरुद्ध संवाय निम्नलिखत रीति में किया जाएगा, श्रीएगा, श्रीप्त --
- (1) (क) अंतरिती बैंक प्रथमतः ऐसे व्यक्ति से जो विहित तारीख को अंतरक बैंक में प्रास्थिति भेवर धारक के रूप में रिजस्ट्रीकृत या (या जो इस प्रकार रिजस्ट्रीकृत किए ज'ने का हकदार होता है) ऐसी तारीख या क्षारीखों से तीन मास के अन्वर जो विनिर्दिष्ट की जाए जाएं, ऐसे ग्रेयर या भ्रेयरों और अकाया मांगों, यथा कोई हों, की बाबत उसके द्वारा असदत्तरह रही अनाहत रक्षम का सवाय करने की अपेक्षा कर सकेगा और तत्मख्वान् यदि यह अवश्यक पाथा जाता है तो वह ऐसे प्रत्येक व्यक्ति से जो विहत तारीख को अंतरक बैंक के साधारण श्रेयर धारक के रूप मे रिजस्ट्रीकृत या (या जो इस प्रकार रिजस्ट्रीकृत काए जाने का हकदार होता) ऐसी तारीख था तारीख से जो विनिर्दिष्ट की आए तीन मास के भंदर ऐसे श्रेयर या श्रेयरो या बकाया मांगों, कवि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असंदत्त रह रही अता-हत रकम का संवाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।
- (ख) ग्रंतरक बैंक प्रस्थेक मामले की परिस्थितियों की ध्यान में रखते हुए, व्यक्तिकम की कालावधि के लिए छः प्रतिशत याषिक क्याज हित खण्ड (क) के श्रधीन देय रकम के संदाय की मांग भौर उसे प्रवर्तित करने के लिए सभी उपलब्ध कथम उठायेगा।
- (2) प्रंतिनित बैंक शशिमों, कय या मिलिहाटा किए गए मुनलान, हुं हियों, यही, ऋणों श्रीर विविध ऋणों तथा श्रन्य श्रास्तियों की बाबत जो "ऐसे श्रियमों के रूप में जो श्रासानी से वसूनी योग्य नहीं है श्रीर या वसूनी के लिए इ्बंत या शकास्पद है", के रूप में वर्गीकृत किया गया है: या जो उत्तर के यैरा 4 के श्राक्षार पर विहित नारीख के पण्चात

- पूर्णतः या भागतः वसूनी योग्य है या हो सकते हैं, के सम्बन्ध में मामने की परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए, संदाय की मांग और से प्रवर्तित कराने के लिए सभी उपलब्ध कार्यवाही करेगा पग्नु यह और किसी ऋण या प्रास्ति की रकम 50,000 रुपये में अधिक हैं, तो प्रतिरिधी वैंक भागीय रिजर्व बैंक से अनुमंदन के बिना:
- (क) ऋण या किसी अन्य व्यक्ति के साथ कोई समझौता या ठहराव नहीं करेंगा या किसी ऐसे ऋण या ग्रास्ति को बट्टे खाते में नहीं डालेगा।
- (वा) उसे प्रंतरित किल्हीं प्रतिभृतियों का था उसके द्वारा ली गनी किसी ग्रास्ति का विकथ या प्रत्यका व्ययन नहीं करेगा।
- (3) इसके श्रांतिरक्त, श्रेंतिसी बैंक, बैंककारी विनियमन श्रिप्रित्यम, 1949 की धारा 45 ज के साथ श्रीर कम्पनी श्रधितियम, 1956 की धारा 543 के साथ भी पठित बैंककारी विनियमन श्रधितियम, 1949 की धारा 455 के श्रधीम श्रंतिरती बैंक के किसी संग्रवर्तक, निदेशक, श्रवंधक या श्रन्थ श्रधिकारी के विश्व उच्च न्यायालय धारा नुकमानी के रूप में श्रधिनिणीत की गयी रक्तम यदि कोई हो, की मांग करने श्रीर उत्तत भंदाय करवाने के लिए प्रत्येक सामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सभी उपलब्ध कार्यवाहिया करेगा.
- (4) श्रंतिरती बैंग, उपर्युक्त खण्ड (1) (2) और (3) में उल्लिख्त मदों के कारण श्रंपने द्वारा की गयी बसूलियों में किसी में समाधित दायित्व की बाबत, और रिजर्व बैंक पूर्व अनुमोवन से किसी ऐसे वायित्व, जाते वह ममाधित हो या अत्यांतिक, की बाबत जिसे उपपुष्ट पैरा (4) निशंघतों के श्रनुसार निर्धारित नहीं किया गया था श्रोर को बिहित तारीख को या उसके पश्चात् उद्मृत हुआ है या जिसका पता चला है, संबाय कर सकेगा या उस सीमा तक, जो पैरा 45क के श्रदीन उसके लिए किया गया उपबन्ध अपयोध्त ही, उपबन्ध कर सकेगा।
- (5) श्रंतरिती बैंक, उपर्युक्त खण्ड (1), (2) श्रौर (3) में उल्लिखित मदों मे कारण अपने द्वारा की गयी बल्लियों में से, उस प्रयोजन के लिए उपगत ब्यय की और भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन से ऐसे प्रत्य ब्ययों की जो उचित समझा जाए, उनमें से कटौती नारने श्रीर उपर्युक्त खण्ड (4) के नियंवनों के अनुमार उसमें से रक्तम विनियोजित करने के पश्चात या ऐसे श्रुतिशेष, यदि कोई हों, में से जो ऐसे दाविकों की सीमा अंतिम कप से श्रीकिषिवत की अने के पश्चात इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए युवा संगणित समाश्रित दायित्वों की बायत उपवन्त्र में से उपलब्ध हो।
 - (क) निक्षेप कीमा और प्रस्थय गारंदी निगम प्रधिनियम, 1961 की घारा 18 की उपघारा (2) के प्रधीन प्रतिरिती बैंक द्वारा निगम से प्राप्त रकम प्रीर निगम द्वारा उपवधिन रकम, यदि कोई हो, का संगय करेगा,
 - (ख) ऐसे तिक्षेपकर्ताघों के मामले में, जिनकी बाबत अंतरिक्षी बैक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त नहीं की गयी है, संप्रहण खाते की बाबत शोध्य रकमों का, घौर ऐसे निक्षेप-कर्ताघों के मामले में जिनकी बाबत घंतरिसी बैंक द्वारा कोई रकम निगम से प्राप्त की गयी है या निगम द्वारा अधित की गयी है, निगम द्वारा किए गए या उपबंधित मंदाय की बाबत निगम को उक्स खाते से शोध्य रकमों को उपयुक्त उपखण्ड (क) के

उपबन्धों के अनुसार पहले संदत्त किए जाने के पश्चात् उनके ग्रहण खाते में उन्हें शोध्य ग्रतिशेष यदि कौई हो, का संदाय करेगा।

परस्तु बहु कि निगम को शांध्य रकम, बदि ऐसा करना प्रावश्यक हो तो, अंतरिती बैंक को बहियाँ में उपबंधित की जाएगी तथा निक्षेप बीमा भीर प्रत्यय गारंटी निगम माधारण विनियम, 1961 के विनियम 22 खण्ड (ख) में निनिर्देष्ट रीति से निगम को संबंस की जाएगा। परस्तु बहु भीर कि अंतरिती बैंक, उपधृक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट सी जाएगा। परस्तु बहु भीर कि अंतरिती बैंक, उपधृक्त खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट संवाय उस दक्षा में करेगा —

- (1) यवि पैरा(5) के खण्ड (खा) में उल्लिखित तस्तमः न या समरूप खाते की जन्द नहीं किया गया है, या वह उस खाते में प्रत्यक्ष द्वारा भुगतान के लिए परिएक्व नहीं हुआ है, और
- (2) यदि उपन खाते को बन्द कर दिया गया है या वह नकद भूगनान के लिए परिपम्ब हो गया है।
- (6) उपर्युक्त खण्ड (5) के उपखण्ड (क) के निवन्धों के धनुसार निगम को मोध्य रकमों, और उस खण्ड के उपखण्ड (ख) के निवंधनों के धनुसार निक्षेपकतिओं के संग्रहण खाते में मोध्य रकमों की श्रेणी ध्रापस में समान होगी, और यदि उनका संदाय पूर्णतः नहीं किया जा सकता तो उसमें समान धनुपात में कमी होगी।
- (7) इस पैरा के खण्ड (5) में निर्दिष्ट संदाय के लिए जाने या पूर्णंत उपबंधित किए जाने के पश्चात अंतरिनी बैक, खण्ड (5) में निर्दिष्ट रकमों के उस प्रतिशेष, जो उसके पास उपलब्ब हो, में से, अंतरक बैंक के सूतपूर्व गैयर प्रारकों के खाते में गोड़्य रकम, यदि कोई हो, हेतु एक रीति से और उस कीमा तक, जो नीचे विनिधिष्ट है, अनुपातिक संदाय करेगा,
- (क) प्रथमन : सब खाने के लिए पूर्णनः पंदाय किए जाने तक अंतरक बैंक के मूलपूर्व प्रधिमान ग्रेयरघारकों के खाते में शोध्य रकम, यदि कीई हो,
- (ख) क्विनीयतः सब खाते के लिए पूर्णतः संदाय किए जाने सक अंतरक बैंक के भूतपूर्व सामान्य ग्रेयपःधारकों के खाते में ग्रेश्य रकम यदि कोई हो और उसके पश्चात ।
- (ग) तृतीयतः सब खाते के लिए पूर्णनः संबाय किए जाने नक अंतरक बैंक के भूलपूर्व शास्थानित सेयरधारकों के स्वाते में शोध्य रकम, यदि कोई हो,
- (ध) उपर्युक्त उपखण्ड (क),(ख) और (श) में उस्लिखित सब रक्षम की पूर्णतः संदत्तकरने के पस्त्रात् अंतरिती बैंक के पास बाकी बच्चे श्रविणेष का अंतरक बैंक के मूतपूर्व सामान्य णैयरधारकों के बीच आनुपातिक वितरण किया जाएगा।

परन्तु यह कि यदि कोई प्रश्न उठता है कि उपर्युक्त किसी उप खण्ड में उल्लिखित खाने के लिए कोई रक्षम शोध्य है या नहीं हो तो उसे भारतीय रिजर्व बैंक को निर्विष्ट किया जाएगा जिसका उस पर विनिश्चय अंतिस होगा।

- (8) इस पैरा में निर्विष्ट संग्रहण खाते में णोध्य रक्तम के बारे में कैवल अंतरिती बैंक का दायिस्व उस सीमा तक समझा जाएगा जो इस स्कीम में उपबंधित है।
- (9) बिहित तारीख या ऐसी पूर्वत्तर प्रवधि से, जी केण्यीय सरकार भारतीय रिजर्ब बैंक से परामणं करने के पश्चात् इस प्रयोजन के लिए विनिविष्ट करें, बारह वर्ष के प्रवसान पर, इस पैरा के खण्ड (2) में निविष्ट किसी ऐसी मव का, जो उस तारीख तक क्यूल नहीं की जा सकी ही, मृत्याकन अंतरिक्ष बैंक, द्वारा मारनीय रिजर्ब बैंक के परामणें से किया जाएगा और अंतरिनो बैंक उच्चत मृत्याकन कों ध्यान में रखते हुए, मबधारित कोई रकम इस पैरा के खण्ड (4) में निविष्ट वायिरवों की पृति के लिए प्रावश्यक किसी ऐसी राशि की जो उपर्वृत्त खण्ड (5), (6) और (7) में उपबंधित कम और रीति से उस तारीख तक चुकायी जाने से रह गयी हो, पहने से उनमें कटौती करके वितरित करेगा।

- (10) अंतरिती बैंक, पूर्वं वर्ती खण्ड (1), (2) और (3) में उल्लिखिल मदों के कारण बसूल किए गए ऐसे धन की, जिनकी तुरंत संदाय के लिए उसके द्वारा ध्रपेक्षा किए जाने की संभावना नहीं है, अपने पास या किनी अन्य बैंक या बैकों के पास ब्याज वाले निक्षेणों में, ऐसी रीति से और ऐसी ध्रवधि के लिए, जो मामले के तथ्यों आंग्र परिस्थितियों को क्यान में रखते हुए उपर्युक्त हो या जैसा भारतीय रिजर्व बैंक निदेश दे. विनिद्धित करेगा। प्रोदमून ब्याज को खण्ड (4), (5), (6) और (7) में निर्दिष्ट दायिस्त्रों की पूर्ति के लिए उनमें उपर्योगन रोति से उपयोजिन किया जाएगा।
- 7. किसी प्रसिष्णकत या विवक्षित संविदा में किसी प्रतिकृत बाध के होते हुए भी, पैरा (5) के निवंधनों के प्राप्तार अंतरिती बैंक के पास खोले गए गए खाते की बावत ब्याज का नंदाय किया जाएगा ओर उसके केवल उनमा प्रगते उस्तरवर्ती पैराओं के उपवंधी के धनुसार ऐसी दरों पर, जी अंतरिती बैंक धनुसार करे जमा किया जाएगा।
- 8. कोई भी निशेषकती या अंतरक बैंक या भ्रत्य जेनदार, उसके प्रति अंतरक बैंक के किसी दायित्व की बाबत अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक से इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के मिवाए, कोई मांग करने का हकदार नहीं होगा।
- 9. केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व वैकया अंतरिकी या अंतरिक वैक के खिलाफ किसी ऐसी बात के निए कोई बाद या अन्य विधिक भार्यवाहियां नहीं होंगी, जो इस स्कीम के अनुभरण में सद्वाअपूर्यक की गयो है यो की जाने के लिए आशयिल है।
- 10. अंतरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेगे और यह समझा जाएगा कि उन्हें अंतरिती बैंक द्वारा उभी परिश्वमिक और सेवा के उन्हीं निबंधनों और गर्तों पर नियुक्त किया गया है जो। 19 अगस्त, 1989 का कारबार बंद होते के ठीक पहुंचे ऐनी कर्मचारियों की लागू थी।

परन्तु यह कि अंतरक बैंक के ऐसे कर्मकारी जिन्होंने अं एक बैंक या अंतरिनी बैंक की, उस नारी ख के, जिसकी यह स्कीम केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूर किया गया है, ठीक प्रामानी एक मास के प्रवतान के पूर्व किसी भी समय अंतरिनी बैंक के कर्मवारी न होने के प्रयने प्राणय के बारे में निखित सूचना द्वारा सूचित किया है, बौडौंगिक विवाद प्रिधित्यम, 1947 के उपवधों के प्रधीन ऐसे प्रतिकर, यदिकीई हों, और ऐसे पेंशन, उपवान, मिष्ट्य निधि और सेवानिवृत्ति फायदे के संदाय के निए हकदार होंगे, जो 19 प्रगन्त, 1989 का कारवार के वंद होने के ठीक पहने अंतरक बैंक के प्राधिकरण नियमों के प्रधीन सामान्य तीर पर प्रमुखेय हो।

परन्तु यह और कि अंगरक बैंक के ऐसे कर्मशरियों की बाबत। जिनके बारे में यह समझा जाता है कि उन्हें अं. रिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया गया है, अंगरिती बैंक के बारे में भी यह समझा जाएगा कि उसने अंतरिती बैंक की सेवा में रहते के दौर न उनकी छंडती की दगा में इस भाषार पर छंडती प्रतिकर के संवाय का दायिस्व लिया है कि उनकी सेवा निरंतर बनी रही है और अंतरिती बैंक में उनके स्थानांतरण से विछिन्न नहीं हुई है।

11. अंतरिती बैंक, उस तारीख से जिसकी इस स्काम को संजूर किया जाना है, तीन वर्ष से अनिधिक अविधि के अविधान पर अंतरिक बैंक के कर्मबारियों की वहां पारिश्रमिक और सेवा के यहां निवंजन और सर्वा या मंजूर करेगा, जो अंतरिती बैंक के तस्तमान रॅक या प्रास्थिति के कर्म यारियों को, अंतरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्न गरियों को समान या समलूब्य अंतरिक बैंक के उस्त कर्म यारियों के पास अर्ह गएं। आंर अनुमव के अर्धात रहते हुए, लागू हों।

परम्तु यह कि यदि कीई गंका या मतनेद उत्पन्न होता है कि उन्त कर्मचारियों में से किसी की प्रहेताएं या प्रतृत्व अंगरिती बैंक के क्षत्मान रैंक या प्रास्थित के अन्य कर्मचारियों की प्रहेताएं ऑर प्रतृत्य के सधान या समनुख्य हैया नहीं या बह अंतरिती बैंक के बेतननान में कर्मचारियों का बेतन नियस करने के लिए प्रथनाए जाने बाले सिकान्तीं की प्रक्रिया के संबंध में हैं, तो शंका या भतनेव की भारतीय रिजर्व बैंक का निर्विष्ट किया जाएगा जिसका उस पर जिनिश्चय अन्तिम होगा।

12 यथास्थिति, अंतरक बैंक या अंतरिती बैंक के कर्मजारियों के लिए गठित किसी भिवाय निधि और/श उपग्रान निधि के न्यायी या प्रशासक, जिल्लि। तार्राख को या उसके परचाल यथासंभव गीधा, अंतरिती बैंक के लिए गठित कर्मेकारी भिवष्य निधि और या उपदान निधि के न्यासी की, या अन्यया, जैसा अतरिती बैंक निदेण दे, अंतरिक बैंक के कर्मजारियों के फायदें के लिए न्यास में धारित सब धन और विनिधान अंतरित कर बेंगी।

परन्तु यह कि एसे परजातु श्रीन्यामी, विनिधानी के पृत्य में किसी कमी के लिए, या जिहित तारीख़ के पहले किए, एए किसी कार्य, उपेक्षा या व्यक्तिकम श्री बाबन दायी नहीं होगी।

13. अंतरिकी बैंक ऐसे विवरण और जानकारी भारतीय रिजर्व बैंक की नेजिया, जो भारतीय रिजर्व बैंक इस स्कीम के कार्यान्वित करने के संबंध में समय समय पर अपेका करें।

14. अंतरिती बैंक, अंतरक बैंक के कार्यकलाए का विवरण, ऐसे प्राक्ष्य में और ऐसे कालिक अंतरामों पर जो भारतीम रिजब बैंक इस निमित्त विनिधिष्ट करें. अंतरक बैंक के गेयरधारकों को मेजेगा। ऐसे विवरणों का मेजा जाना तब रोका जाएगा जब रजवें बैंक ऐसा निर्देश है।

15 किसी ऐसी सूचना या प्रस्य संसूचना के बारे में, जिसकी अंसरिती बैंक बारा दी जाने की उपेक्षा की जाती है, उस वशा में यह समझा जाएगा कि उसे सम्यक रूप से दे दिया गया है, यदि अंतरक बैंक की पुरूषकों में रिजस्ट्रीकृत पर्ते पा, जब तक कि कोई नया पता अंतरिकी बैंका की पुरूषकों में रिजस्ट्रीकृत ने हो, प्रेषिती की सन्बंधित किया गया है और उसे पूर्व-संवरत समान्य डाक से शेज दिया गया है, और ऐसी सूचना उसे डाक में डाले जाने के परवात महनानीस बच्टे के अवनान पर तामील की गर्ना समझा जाएगी। इसके अित्रिक्त किया ऐसी सूचना या संसूचना की, जी सार्वजनिक हिन की ही, एक या अधिक दैनिक समान्यार पत्नों में, जिनका परिचालन ऐसे स्थानों पर ही जहां बैंक अपो कारवार ता संख्वात कर रहा था, विज्ञावित किया जाएगा।

16. यदि इस स्कीस के कियी उपबंध या निर्वचन करते समय कीई शंका .रपन्न होती है तो सामले की भारतीय रिजर्ब बैक की निर्दिष्ट किया जाएगा और उसकी राय निर्वचायक होती और अंतरिती बैक और अंतरक बैंक दोनों पर तथा इस प्रदेशक बैंक के सभी सदस्यों, निक्षेपकनित्रों और अध्य सैनवारी तथा कर्मचारियों पर भी और किनी ऐसे अध्य व्यक्ति पर, जिसका इन बैकों से से किसी के संबंध में बाई प्रिणिशार या वायिस्व है, आयद्यकर होती।

17. यथि इस स्कीम के उपबंधों की प्रनार्श करने में काई कठिनाई उत्पक्ष होती है से केन्द्रीय सरकार, अंतरक और अंतरिती बैकों को या उनमें से किसी को, ऐसे निदेश, भी इन स्कील से अंगीत न हो, जारी कर सकींगे, जी केन्द्रीय सरकार की भारतीय रिजर्जनैक से परामर्थ करने के पश्चात बठिनाई दूर करने के प्रमाजन के लिए आजर्यक या उपयुक्त प्रतिक्ष हो।

> [सं. 17 / 7-89-बीओ(-JII (iii) क्य] मन्त्रेण्वर झा, मंयकत समिव

S.O. 155(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of the said section 45 an order of moratorium in respect of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli under sub-section (2) of the said section.

And whereas the Reserve Bank of India in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of Section 45 of the said Act has prepared a scheme for the amalgamation of the Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli, with the Indian Overseas Bank.

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme in draft to the banks concerned in accordance with the provisions of suo-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said schme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of Section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the scheme on and subject to the terms and conditions hereinafter mentioned.

(1) The Bank of Tamilnad Ltd., Tirunelveli shall be the transferor bank and Indian Overseas Bank shall be the transferee bank.

(2) As from the date which the Central Government may specify for this purpose under sub-section (/) of Section 45 of the said Act (hereinafter referred to as the prescribed date) all rights, powers, claims, demands, interests, authorities privileges, benefits, assets and properties of the transferor pank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and convenants reserved by contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipment, plant apparatus and appliances, books, papers stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with banks bullion, all book debts. mortagage debts and other debts with the beneof securities, or any gurantee therefor, all other if any, property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and as from the prescribed date all the liabilities, duties and obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the matter provided hereinafter.

Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issue in favour of the transferee bank.

If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending; the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

If according to the laws of any country outside India the provisions of this scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the undertaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or limitity shall, on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee

(3) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheets prepared in the first instance as at the close of business on the 19th August 1989 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheets shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

A copy each of the balance sheets of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts, or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheets and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of Section 159 of the Companies Act, 1956, and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by Section 285 of that Act.

- (4) (I) The transferce bank shall in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely,
 - (a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.
 - (b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the

purpose of Section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

- (ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.
- (iii) Where the market value of any Government security such as The Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.
- (c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.
- (d) Where the market value or any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.
- (e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.
- (f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.
- (g) Advances including bills purchased and discounted books debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and varified by the transferee bank. Threreafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and or doubtful of recovery".
- (II) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.
- (III) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as on meet realisable at a later date.
 - In the event of any disagreement between the

transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be reterred to the Reserve Bank of India, whose opinion shall be final, provided that until such an opinion is received, the valation of the nem or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

It shall be competent for the Reserve Bank of india in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of lability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

The valuation of the assets and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

- (5) In consideration of the transfer of the property and the assets of the transferor bank to the transferee bank, the transferee bank shall discharge the liabilities of the transferor bank to the extent mentioned in this and the following clauses, namely,
- (a) Any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits together with interest, if any, accrued thereon upto the prescribed date and all other outside habilities as on the prescribed date excluding deposits shall be paid or provided for in full.

EXPLANATION:

For the purpose of this paragraph, interest payable on a deposit upto the prescribed date shall be regarded as part of the concerned deposit.

(b) In respect of every savings bank account or current account or any other deposit including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank and every other account not covered by clause (a), including interest to the extent payable under this scheme, the transferce bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto the pro rata share available in respect of each of the accounts out of the assets referred to in paragraph (4) as valued for the purposes of this scheme on the prescribed date, after excluding from the said assets as so valued the advances considered not readily realisable or bad or doubtful of recovery, any asset or portion of an asset not valued on the prescribed date and any amount needed for the payments or provisions mentioned at clause (a) above and after adding to the said assets as so valued the aggregate amount of the payments made in terms of clause (a) (i) of paragraph 2 of the moratorium order dated the 19-8-89 issued to the transferor bank,

Florided that any payment made from a deposit account on, or after the close of business on 19-3-89 and refere me prescribed date, shall be seekoned towards the amount to be credited under this sub-paragraph and, accordingly the amount to be credited small be the pro rata share less the amount of such payment.

Provided further that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account it may with the approval of the Reserve Bank, withhold the credit to be made in that account in terms of clause (b) above till the transferce bank is able to ascertain the correct balance in such account.

EXPLANATION ·

The term 'pro rata' shall, in so far as it occurs in this paragraph, mean in proportion to the respective amount remaining due as at the close of business on the 19-8-89 together with the interest payable upto the date immediately preceding the prescribed date and shall, in so far as it occurs elsewhere in this scheme mean in proportion to the respective amounts remaining due at the time of the payment or distribution."

(c) After the credits referred to in clause (b) above have been anorded, the transfered bank shall, with the least possible delay but in any case not after that three months from the prescribed date, furnish to the Deposit Insurance and Credit Guaran ec Corporation established under the Deposit Insurance and Cred.t Guarantee Corpora ion Act, 1961 (hereinafter referred to as the Corporation) a list complying in all respects with the requirements of sub-section (1) of Secion 18 of that Act and thereafter whenever amounts referred to in sub-section (2) of Section 18 of that Act are received from the Corporation, the transferee bank shall credit each of the accounts referred to in clause (b) above, within seven days from the date or dates on which the amounts are received, to the extent of the sum due to that account in accordance with sub-section (2) of Section 18 of that Act:

Provided that-

- (i) If any account referred to in clause (b) above has been closed or has matured for payment at the time when any amount for credit to that account is received from the Corporation, the payment to the person entitled to the said amount shall be made by the transferee bank in cash;
- (ii) In case the person entitled to any amount referred to in clause (b) above cannot be found or is not reachly traceable, provision for the amount due to such person shall be made and accounted for separately on the books of the Corporation itself and it shall not be recessary for the Corporation to pay the amounts to the transferce bank unless the person entitled to the amount is found or traced and the Corporation has decided to make the payment in respect of that person through the transferce bank.

(d) On the prescribed date, the entire amount of the paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor vank and the rights of the members of the transferor bank shall, in relation to the transferce bank, be as provided for in paragraph (6) below:-

(6) In respect of

- (A) every account mentioned in clause (b) of the preceding paragraph, the balance in the account, if any, remaining uncredited in terms of that clause and clause (c) and
- (B) every share in the transferor bank, the amount of which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each shareholder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bark in pursuance of clause (i) below,

Shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payments against the account shall be made in the following manner, namely;

- (i) (a) The transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a defered share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) The transferce bank shall take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent per annum for the period of the default.
- (ii) The transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and Sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and or bad or doubtful of recovery", or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date in terms of paragraph (4) above, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000 the transferee bank shall not except with the approval of the Reserve Bank of India,
 - (a) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset,
 - (b) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.

- (iii) The transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under Section 45L of the Banking Regulation Act, 1949, read with Section 45H thereof and also with Section 543 of the Companies Act, 1956;
- (iv) The transferee bank may, out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, make payment or provision in respect of any contingent liability to the extent that the provision made therefor uder paragraph (5) (a) proves to be inadequate, as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph (4) above and has arisen or been discovered on or after the prescribed date;
- (v) The transferce bank shall out of the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (i), (ii) and (iii) above, after deducting therefrom the expenditure incurred for the purpose and, with the approval of the Reserve Bank of India, such other expenses as may be considered reasonable and the amount appropriated therefrom in terms of clause (iv) above, or out of the balance, if any, which may be available from out of the provision in respect of contingent liabilities as reckoned for the purposes of this scheme after the extent of such liabilities has finally been ascertained.
 - (b) pay to the Corporation the amount received by the transferce bank from the Corporation under sub-section (2) of Section 18 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation Act, 1961, and the amount, if any, provided for by the Corporation, and
 - (b) pay, in the case of depositors in respect of whom no amounts have been received by the transferee bank from the Corporation, the amounts due in respect of the collection accounts, and in the case of depositors in respect of whom any amounts have been received by the transferce bank from the Corporation or have been provided for the Corporation the balance if any due to them in their collection accounts after the Coropration in respect of the payment made Corporation in respect of the payment made or provided for by the Corporation have first been paid in accordance with the provisions of sub-clause (a) above;

Provided that the amount due to the Corporation shall, if it becomes necessary so to do, be provided for in the books of the transferee bank and be paid to the Corporation in the manner specified in clause (b) of regulation 22 of the Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation General Regulations, 1961.

Provided further that the transferee bank shall make the payments referred to in clause (b) above,

- (i) if the corresponding or similar account mentioned in clause (b) of paragraph (5) has not been closed or has not matured for payment, by credit to that account, and
- (ii) if the said account has been closed or has matured for payment, in cash;
- (vi) The amounts due to the Corporation in terms of sub-clause (a) of clause (v) above and the amounts due to the collection accounts of the depositors in terms of sub-clause (b) of that clause shall rank equally among themselves, and if they cannot be paid in full shall abate in equal proportions;
- (vii) After the payments referred to in clause (v) of this paragraph have been made or provided for in full, the transferee bank shall, out of the halance of the amounts referred to in clause (v) which may be available to it, make payments pro rata towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
 - (a) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (b) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made; and thereafter.
 - (c) in the third place, the amounts, if any due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made;
 - (d) after all the amounts mentioned in subclauses (a), (b) and (c) above have been paid in full, the surplus, if my, remaining in the hands of the transferce bank shall be distributed pro rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank.

Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above sub-clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

- (viii) The amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;
- (ix) On the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any item referred to in clause (ii) of this paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferce bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferce bank shall distribute any amount or amounts determined in the light

- of that valuation after deducting therefrom first any sum necessary for meeting the liabilities referred to in clause (iv) of this paragraph which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clauses (v), (vi) and (vii) above.
- (x) The transferee bank shall invest such moneys realised on account of items mentioned in the preceding clauses (i), (ii) and (iii) as are not likely to be required by it for immediate payment, in interest bearing deposits with itself or with any other bank or banks, in such manner and for such periods as may be appropriate having regard to the facts and circumstances of the case or as the Reserve Bank of India may direct. The interest accrued shall be applied for meeting the liabilities referred to in clauses (iv), (v), (vi) and (vii) in the manner indicated therein.
- (7) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank in terms of paragraph (5) and credited in accordance with the provisions of that or the next succeeding paragraphs and at such rates as the transferee bank may allow.
- (8) No depositor or other creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.
- (9) No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for anything which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this scheme.
- (10) All the employees of the transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed by the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service as were applicable to such employees immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided that the employees of the transferor bank who have, by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which this scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947 and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefits as may be ordinarily admissible under the rules of authorisations of the transferor bank immediately before the close of business on 19th August, 1989.

Provided further that the transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(11) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which this scheme is sanctioned, pay or g and to the employees of the transferor bank the same remuneration and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank.

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employee are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure of principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(12) The trustees or administrators of any provident fund and or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and or gratuity fund constitued for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the monies and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank.

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the prescribed date.

(13) The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

- (14) The transferce bank shall furnish to the shareholers of the transferor bank a statement of affairs of the transferor bank in such form and at such puriodical intervals as the Reserve Bank of India may specify in this behalf. The sending of such statements shall be discontinued when so directed by the Reserve Bank.
- (15) Any notice or other communication required to be given by the transferce bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferce bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.
- (16) If any doubt arises in interpreting any of the provisions of this scheme, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India and its opinion shall be conclusive and binding on both the transferee and transferor banks, and also on all the members, depositors and other creditors and employees of each of these banks and on any other person having any rights or liability in relation to any of these banks.
- (17) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this scheme, the Central Government may issue to the transferor and the transferee banks or to either of them such directions not inconsistent with this scheme as may appear to the Central Government, after consulting the Reserve Bank of India to be necessary or appropriate for the purpose of removing the difficulty.

INo. 17|7|89-B.O.I.|II(iii)(6)] MANTRESHWAR JHA, Jt. Secy.